नवीनतम गाइड बुक

खजुराहो

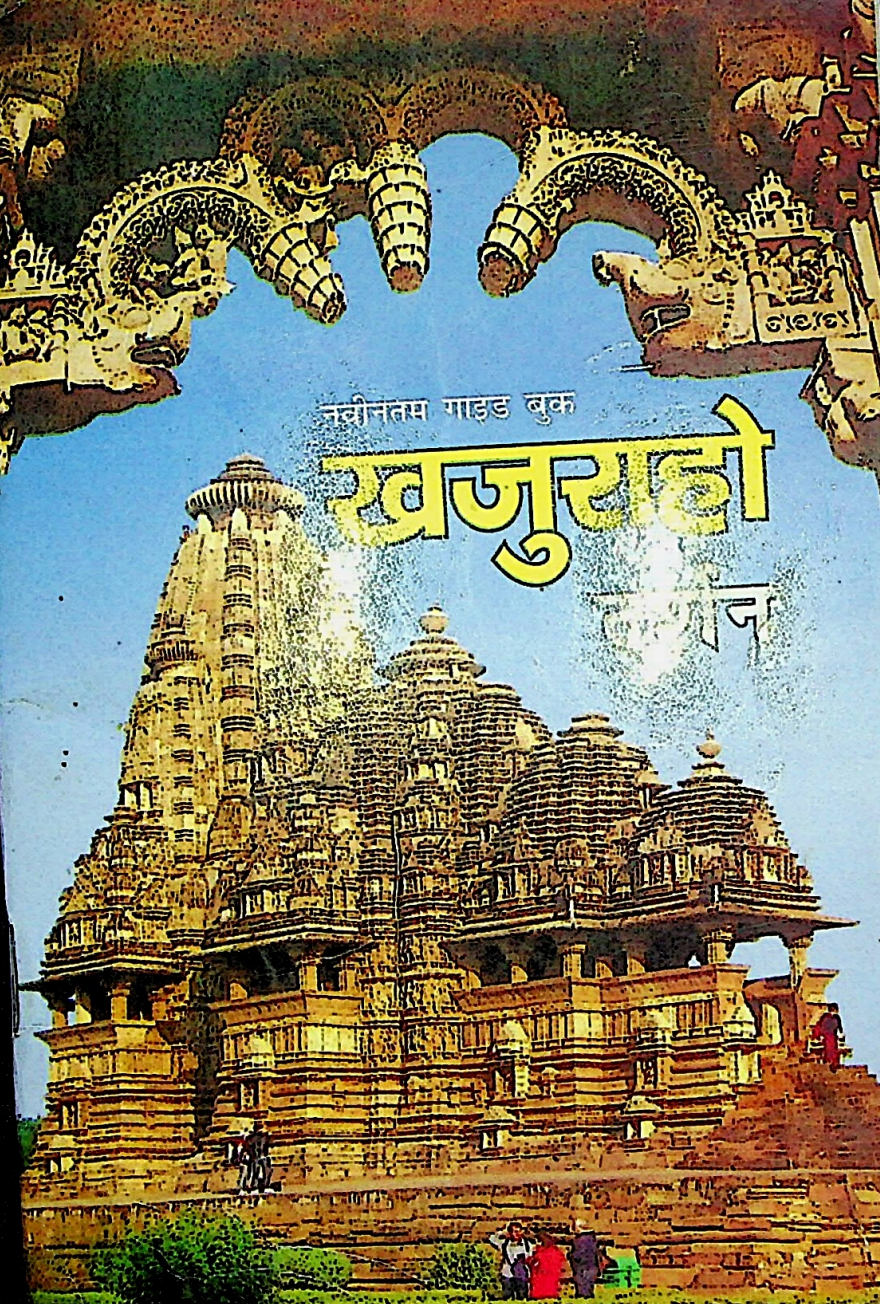

खजुराहो दर्शनीय स्थल

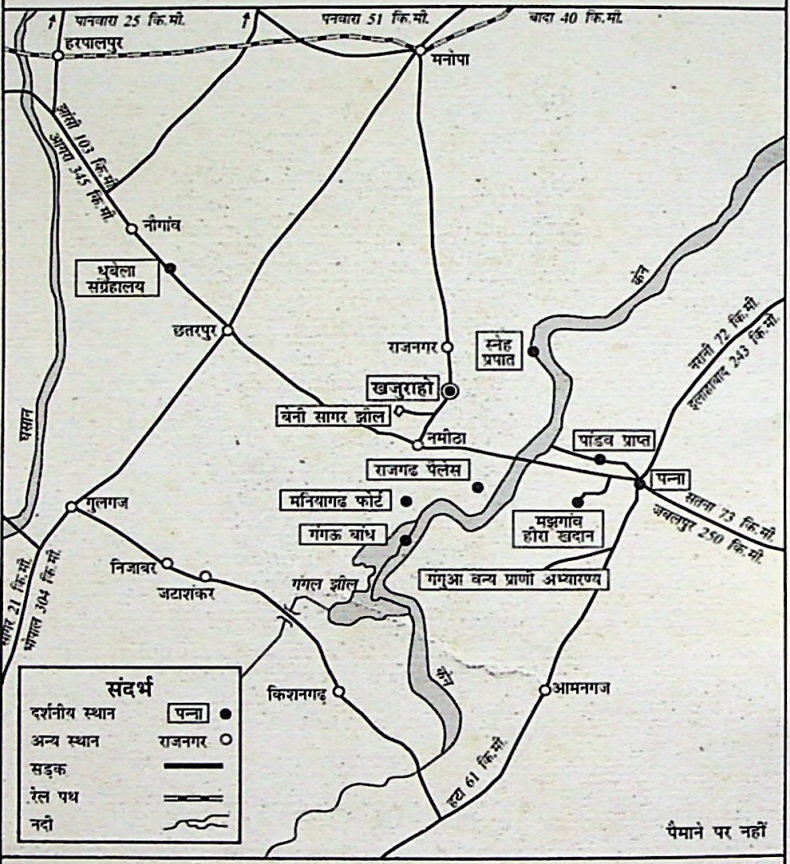

वितरक :-

M. 9425881021

अशोक जैन गिफ्ट एम्पोरियम

पश्चिमी मंदिर समूह के सामने खजुराहो (म०प्र०)

खजुराहो

गाइड बुक एवं मानचित्र

लेखक : सुरेश वाजपेयी

प्रकाशक

टूरिस्ट पब्लिकेशन

1939/7, शंकर टैरेस, फव्वारा चाँदनी चौक दिल्ली-6

मूल्य:- 50/-

विषय सूची

क्र.स.	विवरण	पेज नं.
1	खजुराहो का कला पूर्ण इतिहास	3
2	चन्देल राज्य की वंशावली	7
3	स्थापत्य एवं मूत्तिकला	14
4	श्रृंगार रस एव कामक्रीड़ा	18
5	खजुराहो के प्रमुख मन्दिर	21
6	पश्चिमी समूह	22
7	चौसठ योगिनी मन्दिर	22
8	लालगुआ मन्दिर	23
9	मत्तगेश्वर मन्दिर	23
10	बराह मन्दिर	24
11	लक्ष्मी मन्दिर	25
12	लक्ष्मण मन्दिर	25
13	खजुराहो मानचित्र	31-34
14	कन्दारिया महादेव मन्दिर	39
15	महादेव मन्दिर	42
16	देवी जगदम्बा मन्दिर	42
17	चित्रगुप्त मन्दिर	43
18	चोपड़ा तालाब	44
19	पार्वती मन्दिर	44
20	विश्वनाथ मन्दिर	44
21	नन्दी मन्दिर	46
22	पूर्वी मन्दिर समूह	47
23	हनुमान मन्दिर	47
24	वामन मन्दिर	48
25	जवारी मन्दिर	48
26	ब्रह्मा मन्दिर	49
27	खखरा मन्दिर	49
28	जैन मन्दिर	49
29	पार्श्वनाथ मन्दिर	50
30	आदिनाथ मन्दिर	52
31	जैन संग्रहालय	52
32	शांतिनाथ मन्दिर	54
33	दक्षिण मन्दिर समूह	54
	दूल्हादेव मन्दिर	54
34	चतुर्भुज मन्दिर	56
35	पुरातत्व संग्रहालय	57
36	खजुराहो में प्रतीकात्मक दृश्य	58
37	कीर्तिमुख	58
38	खजुराहो के नजदीक पर्यटक स्थल	58
39	धुवेला संग्रहालय	59
40	पन्ना राष्ट्रीय उद्यान	59
41	ओरछा	59
42	चित्रकूट	60
43	पन्ना हीरे की खान	60
44	बान्धवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान	60
45	खजुराहो में शापिंग	60
46	खजुराहो कैसे पहुंचे	61
47	खजुराहो में रेलवे एवं बस सुविधा	62
48	खजुराहो में भोजनालय एवं होटल	63
49	खजुराहो से प्रमुख शहरो की दूरियां	64

खजुराहो का कलापूर्ण इतिहास

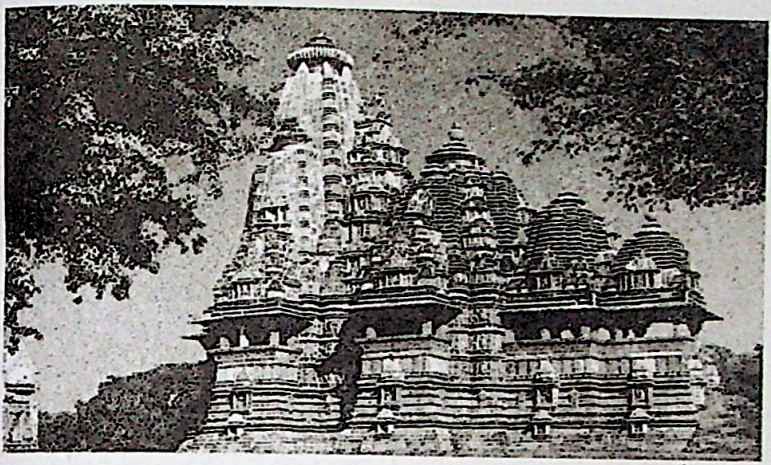

खजुराहो मॉदिर

खजुराहो अपने कलापूर्ण मन्दिरों के लिए विश्व के पर्यटक मानचित्र पर विशिष्ट स्थान रखता है। खजुराहो शिल्प एवं वास्तु कला 10वीं एवं 11वीं शताब्दी के देवालयों के लिए स्वर्णिम मानी जाएगी। अतीत के झरोखे में झांकने पर हम पाते हैं कि इस समय मन्दिरों में पूर्ण मूर्तियों का अंकन, स्त्री सौन्दर्य, कामशास्त्र सम्बन्धी अनेकों प्रकारों के आसन से परिपूर्ण मूर्तियों के अंकन के लिए खजुराहो ने प्रसिद्धि पायी थी। मध्य प्रदेश के उत्तरी भाग में स्थित खुजराहो, छतरपुर एवं पन्ना के बीच में बमीठा से उत्तर की ओर 11 कि०मी० की दूरी पर चन्देल राजाओं की पूजास्थली रही है यहां पहुंचने के लिए वायु सेवा की नियमित उड़ानें इसे आगरा-दिल्ली-वाराणसी एवं नेपाल से जोड़ती है। रेलवे के झांसी, हरपालपुर, महोबा अथवा सतना स्टेशनों पर उतरकर बस द्वारा खजुराहो पहुंचा जा सकता है। सड़क मार्ग से दिल्ली, इन्दौर, भोपाल, सागर, वाराणसी, कानपुर एवं लखनऊ आदि से पहुंचा जा सकता है।

नवीं शताब्दी तक प्रतिहार साम्राज्य का ही हिस्सा था। हिन्दू धर्म ग्रन्थों में इसे युद्ध देश कहा गया है। गुप्त काल में इस प्रदेश को वन देशा के नाम से कहा गया है। कालिंजर एवं चित्रकूट इसी क्षेत्र के हिस्सा रहे हैं। जहां

कलिंजर, भगवान शिव की तपस्या स्थली थी वही चित्रकूट भगवान राम की। 14 वर्ष वनवास में से कुछ समय भगवान राम ने चित्रकूट में बिताये थे। उसी समय से यह स्थान साधुओं एवं योगियों का रहा है।

भारत में 200 ई०पू० से ही स्थापत्य कला एवं मूर्तिकला का विकास होने लगा था। इसके बाद गुप्त काल में यह कला भूमरा, नचना, खोह, एवं देवगढ़ में विकसित हुई। भूमरा एवं नचना में क्रमशः शिव मन्दिर पार्वती मन्दिर गुप्त कालीन शिल्पकला के अद्वितीय उदाहरण हैं। इसके बाद प्रतिहार शासकों ने भी शिल्प कला को आगे बढ़ाया, नचना में चतुर्मुखी महादेव मन्दिर, मनखेड़ा तथा उमरी में सूर्य मन्दिर इसके सुन्दर उदाहरण हैं। लावा पत्थर के छोटे-छोटे मन्दिर मऊसहानिया जिला छतरपुर में बनवाये जो शिल्पकला के बेजोडे नमूने हैं।

मध्य काल में यह क्षेत्र जेजाक भुक्ति के नाम से जाना जाता था जो चौंदहवीं शदी में बुन्देलखण्ड के नाम से प्रसिद्ध हुआ। वर्तमान में भी यह सारा क्षेत्र बुन्देलखण्ड नाम से ही जाना जाता है। नवमीं शताब्दी के शुरू होते ही गौरवशाली इतिहास ने वह पन्ना लिख दिया जिसमें सम्पूर्ण कला का विकास प्रारम्भ हुआ।

चन्देल वंश के प्रथम संस्थापक चन्द्रवर्मन ने अपनी राजधानी महोबा में बनवायी जिसे प्राचीन काल में महोत्सव नगर के नाम से जाना जाता था। इसी के अधीन मध्य भारतीय संस्कृति कला, शिल्पकला एवं साहित्य कला का विकास हुआ तथा यहां कई देवालय बनाये गये। चन्देल राजाओं के दरबार में जगनिक-माधवा- रामानन्दी-गदाधर जैसे महान कवि रहे वहीं कृष्ण मिश्रा जैसे महान नाटककार जिन्होंने 'प्रबोध-चन्द्रोदय' नाटक की रचना की। चन्देल राजाओं में धंगदेव एवं कीर्ति वर्मन का नाम उच्चकोटि के काव्य-मर्मग्यों में लिया जाता है। वहीं गंडदेव एवं परमर्दी देव उच्च कोटि के कवि थे। चन्देल राजाओं की महल, किले, जलाशय एवं मन्दिरों के बनवाने में विशेष रुचि रही है। इसी तारतम्य में महोबा, कालिंजर एवं अजयगढ़ में प्रमुख रूप से किलों, तालाब, मन्दिरों आदि का विकास हुआ। चन्देल राजाओं ने उपरोक्त स्थानों को ही अपनी शक्ति का गढ़ बना लिया था यह क्रम 14वीं शताब्दी तक निरन्तर चलता रहा। इसी बीच मुस्लिम आक्रमणकारियों का भी सामना करना पड़ा। सन् 1022 में महमूद गजनवी ने कालिंजर किले पर आक्रमण करके तत्कालीन चन्देल राजा विद्याधर को

कांटा निकालते हुए

जलाशय के बारे में भी जिक्र आया है जो कि लगभग 1 मील लम्बाई में है, तालाब के चारों कोने पर योगियों के बैठने का स्थान जहां पर वह तपस्या करते हैं एवं योग बल से रोगियों के रोग को ठीक करते थे और भगवान शिव की कृपा से सभी आने वाले रोगी प्रसन्नतापूर्वक वापिस अपने-अपने स्थान को जाते थे।

सन् 1818 में फ्रेंकलीन ने जो एक अंग्रेज खोज कर्ता थे इसे खण्डहर के रूप में निरुपित किया। उनके अनुसार विशाल जंगल में मन्दिर खण्डहर के रूप में स्थित थे। मन्दिरों में पेड़-पौधों एवं पक्षियों ने अपना वास बना लिया था। फ्रेंकलिन के यात्रा वृतान्त से प्रेरित होकर अंग्रेज सरकार ने सन् 1838 में टी०एस० बर्ट को जो कि एक इन्जीनियर थे, और अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए खजुराहो भेजा गया था। पी०सी० बर्ट खजुराहो की स्थापत्य कला, मूर्ति कला को देखकर एवं मन्दिरों की कला शैली को देखकर बहुत अधिक प्रभावित हुए। उन्होंने संक्षेप में मत्तंगेश्वर, नन्दी, लक्ष्मण, बराह आदि मन्दिरों का वर्णन किया है। उस समय केवल मत्तंगेश्वर मन्दिर की ही पूजा हुआ करती थी।

सन् 1852 से सन् 1885 के बीच पुरातत्त्व एवं मन्दिरों का विस्तृत सर्वेक्षण सर एलेक्जेन्डर कनिंघम द्वारा किया गया। सन् 1880 में अंग्रेज लेखक ने खजुराहो के ऊपर एक पुस्तक बहुत ही मार्मिक ढंग से लिखी जो तत्कालीन खजुराहो का सजीव चित्रण था। इसके बाद से कई पुस्तकें लिखी गयीं जिसमें खजुराहो की पूर्ण जानकारी मिलती है।

सन् 1904 में भारतीय पुरातत्व विभाग ने इसे अपने अधीन कर लिया एवं इसका उचित ढंग से जीर्णोधार कराया। जिसमें पूर्ण सहयोग छतरपुर

राजघराने का भी रहा।

आज खजुराहो के मन्दिर भव्य एवं गरिमापूर्ण प्राचीन शिल्प कला का गौरव बढ़ा रहे हैं। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के संरक्षण में खजुराहो ने विश्व के प्रमुख पर्यटक स्थलों के रूप में अपना एक विशिष्ट स्थान प्राप्त कर लिया है। खजुराहो अथवा खजूर वाहक के नामकरण के सम्बन्ध में इतिहासकार के मत में भिन्नता है कुछ खजुराहो को खजूरवाहक का परिवर्तित नाम मानते हैं। चन्द्रदाई के पृथ्वीराजासो में इसे 'खजूरपुरा' या 'खजिनापुरी' के नाम से जाना था।

लक्ष्मण मन्दिर के शिलालेख 954 ई० एवं विश्वनाथ मन्दिर 1002 ई० खजूर वाहक के नाम से आया है। चीनी यात्री हवेनसांग ने भी खजुराहो का उल्लेख किया उसने इस जाहुति राज्य की राजधानी कहा, अलवरूनी ने भी सन् 1031 एवं इब्नबतूना ने सन् 1335 में इसे खजुराहो कहा। अन्य कुछ लोग इसके नाम की उत्पत्ति के बारे में किंवदन्ती के रूप में कहते हैं कि इस वैभवशाली नगर के प्रवेश द्वार पर दो स्वर्ण वर्ण के खजूर के वृक्ष शोभा रहे हैं। इसलिए इसका नाम खजुराहो पड़ा, कुछ लोग इसे खजूर के वृक्षों के मध्य इस नगर को मानते हैं जिस कारण खजूर वाहक या खजूर वाटिका, खुजराहा, खजूरपुर कहा गया किन्तु आज खजूर के पेड़ अधिक संख्या में नहीं हैं।

शीशा देखते हुए

चन्देल राज्य की वंशावली

चन्द्रवर्मन (ननुक) 9वीं शताब्दी

वाक्पति

जयशक्ति — विजय शक्ति

राहिल

हर्षवर्मन 900-925

लक्ष्मण वर्मन या यशोवर्मन 925-950

धंगदेव 950-1002

गण्देव वर्मन 1002-17

विद्याधर वर्मन 1017-29

विजयपाल 1029-51

देव वर्मन 1051-70

कीर्तिवर्मन 1070--1098

सुलक्षण वर्मन 1100-1117

जय वर्मन 1117-1125

पृथ्वी वर्मन 1125-1129

मदन वर्मन 1129-63

परमारधिदेव (परमल) 1163-1202

यदि यह कहा जाए कि चन्देल राजाओं का इतिहास ही खजुराहो अथवा चन्देल से ही खजुराहो है तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी क्योंकि खजुराहो चन्देलों के बिना अस्तित्वहीन है। उनके बिना खजुराहो कुछ भी नहीं है। चन्देलों की उत्पत्ति के वारे में परिमल रासों के महोबा खण्ड में जो कि 17वीं शताब्दी में लिखा गया था कुछ इस प्रकार है-

काशी नरेश इन्द्रजीत के पुरोहित हेमराज की नवयौवना पुत्री हेमावती एक रात काम के वेग से व्याकुल होकर स्नान करने के लिए सरोवर में गई तभी आकाश में चन्द्र देवता प्रकट हुए और उन्होंने हेमावती के असीम सौन्दर्य को देखा और वह उस पर मोहित हो गये। चन्द्र देवता पृथ्वी पर अवतरित हुए और अनुरागपूर्वक आलिंगन किया। ब्रह्म मूहूर्त में जब वह जाने लगे तब हेमावती ने अपने कौमार्य भंग होने पर उन्हें शाप देना चाहा। शाप के भय से चन्द्र देवता रुक गये एवं उन्होने हेमावती को आश्वासन दिया कि इस मधुर मिलन के संयोग से उत्पन्न होने वाला पुत्र अजेय वीर क्षत्रिय एवं प्रतिष्ठित प्रशासक होगा। उससे कई राज्यों वंशों की उत्पत्ति होगी जो कि एक लम्बे समय तक राज्य करेंगे। उनका नाम सदियों तक रोशन होगा। कुछ समय के उपरान्त हेमावती ने करनावती नदी के तट पर जिसे आज केन नदी के नाम से जाना जाता।, चन्द्रमा के समान ही एक सुन्दर बालक को जन्म दिया। इस अवसर पर चन्द्रमा भी अन्य देवताओं के साथ अवतरित हुए।

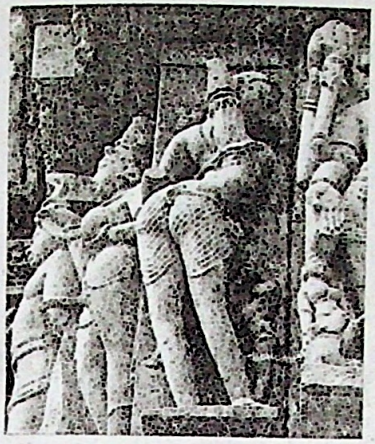

देवताओं के गुरु वृहस्पति ने ही हेमावती के पुत्र की जन्म कुण्डली बनाई जिसमें बच्चे के पराक्रम एवं विलक्षण बुद्धि का पता चला जो कि बहुत ही प्रभावशाली था। मात्र 16 वर्ष की उम्र में एक पत्थर से शेर को एवं लकड़ी मात्र से बब्बर शेर को मार गिराया। वही शेर बाद में चन्देल राज्यवंश का राज्य चिह्न बना। नामकरण संस्कार में बच्चे का नाम चन्द्रवर्मन रखा गया। बाद में चन्द्रवर्मन को भगवान चन्द्रदेव से पारस मणि (टच स्टोन) प्राप्त हुआ। चन्द्रवर्मन का विवाह संस्कार समस्त देवी-देवताओं के समक्ष सम्पन्न हुआ। वृहस्पति, कुबेर एवं चन्द्रदेव ने उन्हें राजनीति एवं शासन चलाने की शिक्षा दी।

चन्द्रवर्मन ने कलचुरि राजा के ऊपर आक्रमण किया और उससे कालिंजर का किला विजय के रूप में हासिल किया तथा कालिंजर को केन्द्र बनाया और उसके आसपास कई राज्यों पर विजय हासिल की, इसके उपरान्त चन्द्रवर्मन अपनी मां हेमावती एवं पत्नी के साथ खजुराहो आये। खजुराहो में श्रेष्ट, ब्राह्मणों एवं मन्त्रियों को बुलाकर विचार विमर्श किया और इसके पश्चात् भाण्ड्य यज्ञ करवाया। यज्ञ के लिए 85 बेदियां बनवाई गयीं एवं बेदियों के पास कुएं निर्माण कराये गये जिनमें शुद्ध घृत भरा गया एवं रहटों द्वारा यज्ञ बेदियों तक पहुंचाया गया। इस यज्ञ द्वारा उसने अपनी मां को पापों से मुक्ति दिलवाई।

कुछ इतिहासकार खजुराहो में निर्मित 85 मन्दिरों को चन्द्रवर्मन द्वारा ही बनवाये गये, ऐसा मत व्यक्त करते हैं। लेकिन मन्दिरों की निर्माण शैली, विभिन्नता एवं कला विकास के क्रम को देखते हुए उपरोक्त मत काल्पनिक प्रमाणित होते हैं। सम्भवत: ऐसा प्रतीत होता है कि चन्द्रवर्मन के द्वारा निर्मित 85 बेदियों के स्थान पर विभिन्न राजाओं ने मन्दिरों का निर्माण कराया। स्पष्ट है, कि वर्तमान में खड़े 20 मन्दिरों की पृथक शैली एवं स्थिति अलग-अलग राजाओं द्वारा बनाये गये, वाक्य की सार्थकता सिद्ध करती है। 85 यज्ञ बेदियों

के स्थान पर बनाये गये, वाक्य की सार्थकता सिद्ध करती है। 85 यज्ञ बेदियों के स्थान पर बनाये गये मन्दिरों में से मात्र 25 मन्दिर ही शेष बचे हैं जो अपनी गौरवकथा, इतिहास, उच्चकोटि की शिल्प कला के स्वर्णिम काल की याद दिलाते हैं।

चन्द्रवर्मन ने खजुराहो में यज्ञ कराने के पश्चात् महोबा को प्रस्थान किया और महोबा को अपनी नई राजधानी बनाया। ननुकदेव ने खजुराहो में सम्भवत: 9वीं शताबदी में शासन किया ऐसा प्रतीत होता है जिन्हें राजा, नृप अथवा महिपाल आदि नामों से सम्बोधित किया गया। ननुकदेव के बारे में कहा गया कि जिस प्रकार सोने को कसौटी पर कसा जाता है उसी प्रकार ननुक देव अपनी कसौटी पर खरे उतरे क्योंकि अपने शत्रुओं पर विजय सहज ही प्राप्त कर लेते थे। उनके पश्चात् उनके पुत्र वाक्पति के दो पुत्र हुए। जयशक्ति एवं विजयशक्ति दोनों ही जेजा एवं बेजा नाम से जाने जाते थे। एक शिलालेख के अनुसार जय शक्ति के नाम ही इसी क्षेत्र का नाम जैजाकमुक्ति पड़ा जिसे आज सब लोग बुन्देलखण्ड के नाम से जानते हैं।

विजय शक्ति ने राजा देवपाल जो कि पल्लव राज्य वंश का था उसके साथ मिलकर दक्षिण राज्यों में विजय प्राप्त की। राहिल विजयशक्ति के उत्तराधिकारी हुए। उनकी प्रशंसा महान योद्धा के रूप में की जाती थी। उनके बारे में सोचकर शत्रुओं की नींद हराम हो जाती थी। राहिल ने कई बावली तालाब एवं मन्दिर बनवाये महोबा का सूर्य मन्दिर जो तालाब के किनारे है इन्हीं का बनावया हुआ है। तालाब राहिल के नाम से जाना जाता है।

राहिल के पुत्र हर्षवर्धन ने 900 ई० में राज्य की गद्दी सम्भाली। इसके बाद सन् 915 में अपने सम्राट राजा प्रतिहारों को राष्ट्रकूटों से कन्नौज वापिस लेने में सहायता की एवं बहुत प्रसिद्धी हासिल की। कहा जाता है कि खजुराहो में प्रसिद्ध मत्तगेश्वर मन्दिर इन्हीं के द्वारा बनवाया गया।

पार्श्वनाथ मंदिर में पायल पहनती स्त्री

हर्षवर्धन के बाद उनका पुत्र लक्ष्मण वर्मन उर्फ यशोवर्मन शक्तिशाली राजा हुए। सही मायने में कहा जाए तो यशोवर्मन राजनैतिक एवं सैनिक बल दृष्टि से अपने राज्य के संस्थापक थे तो कोई अतिश्योक्ति नहीं कही जाएगी। कश्मीर से महाकौशल एवं मालवा से बंगाल तक उनके शत्रु मात्र नाम लेने ये भय से कांपते थे। उनके पास 1,600,000 पैदल सैनिक 38000 घुड़सवार एवं 250 हाथी थे। इन्होंने प्रतिहार राजा का साथ देकर राष्ट्रकूटों से द्वारा कालिंजर का किला जीता एवं उन्हें वापिस न करके कालिंजर को अपना शक्ति केन्द्र बनाकर अपने पास रख लिया। एक शिलालेख के अनुसार खजुराहो का पंचायत शैली का लक्ष्मण मन्दिर इन्हीं का बनवाया था। उस समय यह मन्दिर विष्णु के नाम से जाना जाता था। यह ऐश्वर्यशाली एवं विशाल मन्दिर, उस समय का सबसे अधिक विकसित एवं अलंकृत मन्दिर कहा जाता था; आज भी बहुत सुन्दर एवं सुरक्षित है जिसमें भगवान विष्णु के वैकुण्ठ रूप की प्रतिमा विराजमान है।

धंगदेव वर्मन जोकि यशोवर्मन के पुत्र थे। इन्होंने वीरतापूर्वक अनेक युद्ध लड़े एवं अभूतपूर्व सफलता हासिल की तथा राज्य बिस्तार किया और प्रतिहारों के संरक्षण से अलग होकर अपने आपको स्वतन्त्र राजा घोषित किया तथा महाधिराज की पदवी पाई और उत्तर भारत में सुदृढ़ राज्य के रूप में विकसित किया। सुदुर राज्यों में भी अपनी विजय की पताका फहराया इनके राज्य की सीमा विदिशा से ग्वालियर एवं वाराणसी से नर्मदा तक थी। 950 ई० से 1002 तक 52 वर्ष तक धंगदेव वर्मन ने राज्य किया। 102 वर्ष तक जीने वाला राजा धर्मप्रिय, न्यायप्रिय एवं कला प्रेमी होते हुए बुद्धिमान एवं उदार एक कुशल प्रशासक थे। उन्होंने अपने अन्तिम समय में गंगा और

जमुना के संगम में जल समाधि ले ली थी। इन्होंने सन् 1002 ई० में विश्वनाथ मन्दिर का निर्माण कराया, दूसरा इन्हीं के कार्यकाल में भगवान पार्श्वनाथजी को समर्पित यह जैन मन्दिर तीसरा मन्दिर वैद्यनाथ मन्दिर के नाम से बनवाया जिसका कोई प्रमाण नहीं मिलता है।

गण्डदेव वर्मन ने सन् 1002 से लेकर सन् 1017 तक राज्य किया। केवल 15 वर्ष राज्य किया अपने पिता धंगदेव वर्मन से प्राप्त राज्य को यथावत रखा। इनके शासन काल में विष्णु मन्दिर का निर्माण हुआ जो वर्तमान में देवी जगदम्बा के नाम से जाना जाता है। दूसरा सूर्य मन्दिर जिसे चित्रगुप्त मन्दिर के नाम से आज जानते हैं।

गण्डदेव वर्मन के बाद उनके विद्याधर वर्मन राज्य गद्दी पर आसीन हुए जिन्होंने 1017 से 1029 तक राज्य किया। विद्याधर को सबसे अधिक शक्तिशाली राजा के रूप में माना गया। ऐसा मुहम्मद गजनी के इतिहास लेखक इब्नउल आधीर ने अपने यात्रा वृतान्त में लिखा और इन्हें बीड़ा कहा। विद्याधर ने अपने शासकाल में चन्देल राजाओं के साम्राज्य को उन्नति के शिखर तक पहुंचाया। मुहम्मद गजनी का दो बार सफल विरोध किया और उसके आक्रमण को दोनों बार विफल किया। प्रथम बार ग्वालियर से मुहम्मद गजनी वापिस लौटा एवं दूसरी बार 1022 में विद्याधर के जागीरदार, वीर दमन कच्छप-घात ने उसे अपनी वीरता से रोका। तब मुहम्मद गजनी विद्याधर से मित्रता कर गजनी वापिस लौट गया। विद्याधर की सेना में 5600 घुड़सवार 184000 पैदल सिपाही, 746 हाथी थे। इतनी बड़ी सेना को देखकर मुहम्मद गजनी ने वापिस लौटना ही उचित समझा। मुहम्मद गजनी के आक्रमण के समय ही प्रतिहार राजा राजपाल की कायरता देखकर विद्याधर ने उसे पूर्णत: नष्ट कर दिया और उसका राज्य अपने राज्य में मिला लिया। इसी प्रकार कलचूरी एवं परमार राजाओं को भी पराजित किया।

विद्याधर ने अपने शासनकाल में खजुराहो का सबसे विशाल एवं शिल्पकला में बेजोड़, उत्कृष्ट मन्दिर जिसे आज कन्दरिया महादेव मन्दिर के नाम से जाना जाता है, निर्मित कराया।

विद्याधर की मृत्यु के बाद उनका उत्तरधिकारी विजय पाल सन् 1029 से 1051 तक राजा हुआ। लेकिन कालिचूर एवं मुस्लिम आक्रमणों के कारण चन्देल राज्य वंश का प्रताप धूमिल होता गया। इसी समय वामन मन्दिर का

निर्माण हुआ।

विजय पाल के बाद उनके पुत्र देववर्मन ने सन् 1052 से 1070 तक राज्य किया। देववर्मन एक कमज़ोर एवं अस्तित्वहीन राजा साबित हुए। कालिचूर राजाओं से पराजय का सामना करना पड़ा।

देववर्मन के उत्तराधिकारी कीर्तिवर्मन हुए जिन्होंने 1070 से 1098 ई० तक चन्देल वंश के पतन को रोका। कालिचूर के सेनानायक गोपाल की सहायता से कालिचूर के राजा लक्ष्मीकरण को पराजित किया और देवगढ़ के किला का नाम कीर्तिगिरि दुर्ग रखा। महोबा एवं चन्देरी में कीर्ति सागर के नाम से बहुत बड़ी दो झीलें इन्हीं के शासन काल में निर्माण कराई गई। खजुराहो में जवारी एवं चतुर्भुज मन्दिर कीर्तिवर्मन द्वारा निर्मित कराये गये। 28 वर्ष के शासन काल में कीर्तिवर्मन ने चन्देल राज्य को शक्तिशाली और समृद्ध किया।

कीर्तिवर्मन के बाद सुलक्षण वर्मन सन् 1100-1117, जय वर्मन 1117-25, पृथ्वी वर्मन 1125-29 तक कोई राजा विशेष महत्व नहीं रखते। पृथ्वी वर्मन के उत्तराधिकारी मदन वर्मन 1129-63 के वागडोर सम्भालने के बाद एक बार पुनः चन्देलों के पतन को रोका और उन्होंने कालिचूर, गहरवार एवं परमारों का दमन किया और मदनपुर नामक एक नगर को बसाया। तालाबों का निर्माण कराया, दूल्हादेव मन्दिर मदन वर्मन द्वारा ही बनवाया गया था। मदन वर्मन के पौत्र परमारधिदेव परमाल इनके उत्तरधिकारी हुए। परमारधिदेव परमाल ने 1166 से 1202 ई० तक शासन किया। इनके शासनकाल में ही पृथ्वीराज चौहान ने कालिंजर एवं महोबा पर चढ़ाई की और इनकी शक्तिक्षीण की। आल्हा ऊदल इन्हीं के राज्य में सेना नायक थे जो अपनी बहादुरी के लिये प्रसिद्ध थे, आल्हा खण्ड में जो कि जगनिक द्वारा लिखा गया था उसमे विस्तार से आल्हा ऊदल का वर्णन है। कुतुबुद्दीन ऐबक द्वारा भी इसी शासनकाल में आक्रमण किया गया और चन्देलों की शक्ति क्षीण होती गई और चन्देल राजा अपने पतन को न रोक सके। खजुराहो की कलात्मक गतिविधियां एकदम नहीं रुक गई। 12वीं शताब्दी के अन्त तक तालाबों, देवालयों का निर्माण होता रहा। 1335 ई० तक खजुराहो के मन्दिर अपनी पूर्ण आभा लिये श्रद्धालुओं द्वारा पूजे जाते रहे हैं। ऐसा इब्नवतूता ने अपने लेख में लिखा। इससे ऐसा प्रमाणित होता है कि शक्ति एवं राजनैतिक महत्व खो देने के बाद भी खजुराहो चन्देलों की धार्मिक राजधानी माना जाता रहा है।

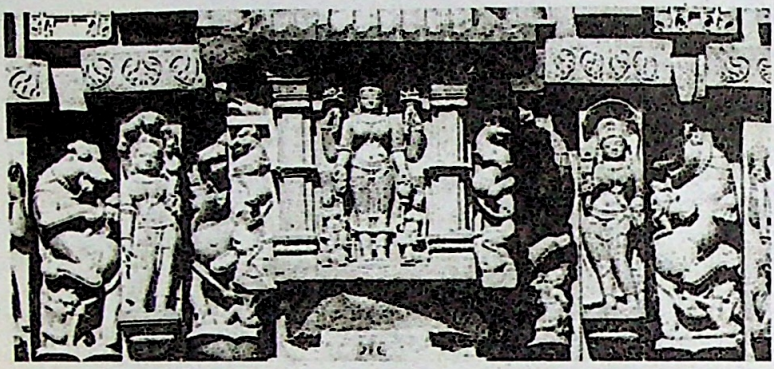

स्थापत्य एवं मूर्तिकला

खजुराहो के मन्दिर अपनी विशिष्ट शैली के कारण विश्व में प्रसिद्ध हैं। स्थापत्य कला की दृष्टि से देखा जाए तो भारत वर्ष में प्रमुख्यत: तीन प्रकार की शैली का विकास हुआ। 1. नागर शैली, 2. वेसर शैली, 3. द्रविण शैली।

नागर शैली प्रमुखत: उत्तर एवं मध्य भारत में विकसित हुई। वेसर बेलूर के मन्दिरों में देखने को मिलती है।

द्रवण शैली दक्षिण भारत के मन्दिरों में देखने को मिलती है।

खजुराहो के मन्दिरों में नागर शैली अधिक विकसित अवस्था में दिखाई देती है। ऐसा प्रतीत होता है कि खजुराहो के शिल्पकारों को इस शैली में महारत् हासिल थी। ऊंचे-ऊंचे पक्के चबूतरे पर बने यहां के मन्दिर एवं सुसज्जित शिखरों का पर्वतों के समान उठना इस विशिष्ट शैली का ही उन्नत प्रमाण है।

मन्दिरों के आंतरिक भागों को मुख्य रूप से पांच भागों में बांटा जा सकता है।

1. अर्धमण्डप–प्रवेशद्वार को ही अर्धमण्डप बोलते है।

2. मण्डप–जिस जगह शिला लेख देखने को मिलता है।

3. महा मण्डप–इसका उपयोग धार्मिक उत्सवों पर सांस्कृतिक कार्यक्रम पेश करने के लिए किया जाता था। धार्मिक नृत्य आदि इसी जगह पर हुआ करते थे।

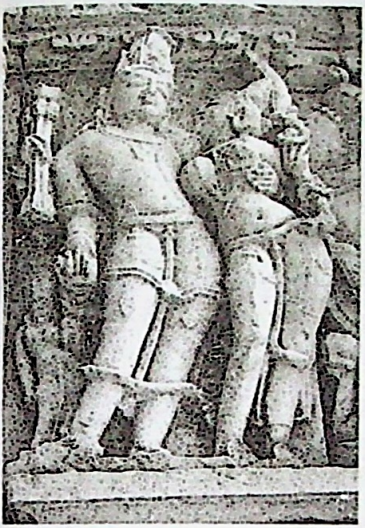

4. अन्तराल-यहां पुजारी लोगों को पूजन एवं पाठ करने में सहायता करते थे। इसका गर्भ ग्रह एवं महामण्डप से सीधा सम्बन्ध रहता है।

5. गर्भग्रह-इसमें इष्ट देव विराजमान होते हैं।

6. परिक्रमा-बाहरी दीवार एवं गर्भग्रह की बाहरी दीवार के मध्य परिक्रमा स्थल है।

आंतरिक तौर पर भी यह मन्दिर दो शैली में विभक्त किये जा सकते हैं। (1) सान्धार (2) निरन्धार।

सान्धार शैली- प्रदक्षिणा पथ से सुसज्जित मन्दिर को सान्धार शैली का मन्दिर कहा जाता है।

निरन्धार शैली-जिस मन्दिर में प्रदक्षिण पथ का अभाव होता है। उसे निरन्धार शैली का देवालय कहा जाता है।

सभी मन्दिर लावा पत्थर की प्राकृतिक चट्टानों के ऊपर बने हुए हैं। यही उनकी नींव के ऊपर जगतियों पर बने मन्दिर तीन भागों में विभाजित हैं। (1) जगती (2) वेदी वन्ध, जंघा (3) शिखर, जो नीचे से ऊपर की ओर बनाये गये हैं।

मन्दिरों का आधार भाग, नींव का वह भाग है जहां जगती, वेदी बन्ध स्थित है यह भाग दो मीटर ऊंचाई तक, सुन्दर अलंकरणों से सुसज्जित है इसके ऊपर जंघा जो मन्दिर की दीवार कही जाती है यही मन्दिर का मध्य भाग है जिसकी सुन्दरता देखते ही बनती है। इनमें बालकनी के रूप में झरोखे भी बने हुए हैं जिससे मन्दिरों के अन्दर प्रकाश जाता है इनकी दीवारें बहुत मोटे पत्थर जिनकी ऊंचाई करीब 3 फीट होगी इनका प्रष्ठ भाग ही मन्दिर की दीवार बनता है। पत्थरों के यह खण्ड एक-दूसरे से लोहे के कांटों से जोड़े गये हैं तथा ऊपर नीचे एक-दूसरे से ताला चाबी शैली में जोड़े गये हैं।

इनमें तत्कालीन जन-जीवन का बहुत ही सुन्दर एवं मार्मिक चित्रण किया गया है। साथ ही मैथुन मूर्तियों का भी अलंकरण मन्दिरों की दीवारों पर हुआ है। विद्वानों के मतानुसार दीवारों में जो पत्थरों के खण्ड लगे हुए हैं वह 30 कि०मी० दूर केन नदी के तट से लाये गये थे। विश्वनाथ मन्दिरों में एक पैनल श्रमिकों द्वारा पत्थर ढोते हुए दिखाया गया है। इन खण्डों को जोड़ने में शिल्पकारों ने इतनी सफाई बरती कि जोड़ नज़र ही नहीं आते एवं ऐसा महसूस होता है कि पूरा पत्थर एक ही चट्टान में निर्मित प्रतीत होता है।

मन्दिरों के शिखर भी अलग-अलग शैली में बने हुए हैं।

1. त्रिरथ शैली- देवी जगदम्बा, चित्रगुप्त एवं चतुर्भुज आदि।

2. पंचरथ शैली-लक्ष्मण, विश्वनाथ और दूल्हादेव।

3. सप्तरथ शैली- कन्दरिया महादेव सप्तरथ शैली में बना हुआ है। अति भव्य व सुन्दर मन्दिर है।

स्थापत्य कला की इन अनमोल धरोहरों में मूर्तियों का भी सजीव चित्रण मन्दिरों में किया हुआ है। शिल्पकला की दृष्टि से प्राचीन भारत में तीन प्रमुख शिल्प विद्यालय थे-(1) गांधार, (2) अमरावती एवं (3) मथुरा।

खजुराहो में मथुरा शिल्प कला का बेजोड़ एवं उत्कृष्ट चित्रण किया हुआ है जो मूतियां सजीव-सी जान पड़ती हैं। मूतियों की शारीरिक बनावट मुख मण्डल के हाव-भाव मूर्तियों की विभिन्न मुद्रायें आदि देखते ही बनती हैं। इन मूर्तियों को हम 6 युग्मों में बांट सकते हैं-

प्रथम युग्म- प्रथम युग्म की विशेषता यह है कि प्रतिमा को एक ही

पत्थर में जिसे समभंगा शैली कहते हैं बनाया जाता है एवं मूर्ति को पीछे से भी गढ़कर पूर्ण आकृति दी जाती है और इसी प्रतिमा को गर्भ ग्रह में स्थापित किया जाता है जो कि वैष्णव, शैव एवं जैन तीर्थकारों तीनों सम्प्रदाय को समर्पित होती है।

द्वितीय युग्म- दूसरे युग्म में वे मूर्तियां आती हैं जोकि मन्दिर के बाहर एवं अन्दर छोटे अथवा बड़े आलों में रखी जाती हैं में अधिकतर पारिवारिक देवी-देवताओं की मूर्तियां होती हैं। यह प्रतिमाएं त्रिभंग स्थिति में बनाई गई हैं जो कि दीवाल वाले पत्थर में ही गढ़कर गहराई देकर बनाई गई हैं। इन मूर्तियों में अष्ट दिक्पाल, परिवार देवता, पार्श्व आदि आते हैं। पौराणिक कथाओं का भी चित्रण द्वितीय युग्म में ही आता है।

तृतीय युग्म- तृतीय युग्म में नारी सौन्दर्य को बहुत ही अच्छे ढंग से दर्शाया गया है। इसमें सुर-सुन्दरी एवं अप्सराओं का चित्रण, उनके अलंकार, चेहरे के भाव आदि का चित्रण किया गया है। इन्हें सामने से एवं विशेष गहराई से गढ़ा गया।

चतुर्थ युग्म- चतुर्थ युग्म में काम कला की मूर्तियां आती हैं कामसूत्र में वर्णित विभिन्न अलिंगनों को मूर्ति रूप देकर मन्दिरों की दीवालों पर विशेष जगह पर चित्रण किया गया है। ऐसा प्रतीत होता है जैसे साक्षात् कामदेव ही हों। ये मूर्तियां देखकर अश्लील नहीं लगती हैं, न ही काम भावना उत्पन्न होती है। ये सब शिल्पकार की उच्च कला एवं मन्दिरों का ही पुण्य प्रताप है।

पंचम युग्म- गंधर्वों गणों विद्याधरों और किन्नरों को पंचम युग्म में मान सकते हैं।

षष्ठम युग्म- छठा एवं अन्तिम युग्म में प्रतीतात्मक मूर्तियों को गिना जाता है। इसमें शार्दूल कीर्तिमुख एवं शेर के साथ बालक जो भी मन्दिरों में देखने को मिलता है।

इसके अलावा बड़े मन्दिरों में मूर्तियों की दो पंक्तियां दिखाई गई हैं जबकि कन्दरिया महादेव मन्दिर जो कि खजुराहो का विशालतम मन्दिर है उसमें मूर्तियों की तीन पंक्तियां दिखाई गई हैं। इन मूर्तियों में मनुष्य की जीवन शैली को बहुत ही मार्मिक ढंग से सजीव चित्रित किया गया है। इनसे तत्कालीन युग के जीवन दर्शन को समझा जा सकता है। एक ऐसी संस्कृति जो भारत वर्ष में इस्लाम साम्राज्य के पूर्व थी। इसमें संगीत कला, नृत्य कला का सम्पूर्ण दर्शन देखने को मिलता है। आखेट एवं युद्ध कला का भी वर्णन इन मन्दिरों में हुआ है। पुरातन काल में मन्दिर ही पाठशाला हुआ करते थे। जहां बच्चों के ज्ञान का पूर्ण विकास हुआ करता था इसलिए गुरु को अपने शिष्यों को पढ़ाते हुए मन्दिरों में दर्शाया गया है। साथ ही सामूहिक सम्भोग के द्रश्य भी दर्शाये गये हैं।

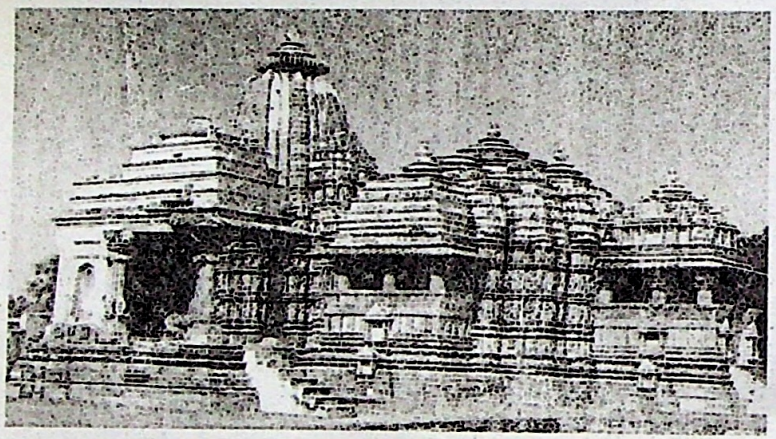

देवी जगदम्बा मंदिर

श्रृंगार रस एवं कामक्रीड़ा

खजुराहो के मन्दिरों में नारी सौन्दर्य को इस प्रकार दर्शाया गया है कि वर्तमान आधुनिक एवं पाश्चात्य सभ्यता भी इस कामुक दर्शन को देखकर धूमिल व रस हीन लगती है। वास्तव में उन शिल्पियों की साधना, उत्साह एवं धैर्य का ही परिणाम है कि उनकी छैनी हथौड़ी से पत्थरों पर भव्य विशाल एवं सुन्दर मूर्तियां बन गई हैं।

खजुराहो के मन्दिरों में मैथुन मूर्तियां हमेशा ही दर्शकों को चौंकाती रही हैं। काम जीवन की मुख्यतम वृत्ति है। यहां मन्दिरों में मोहिनीकरण, वशीकरण एवं उच्चारण आदि का विभिन्न रूपों में चित्रण किया गया है। तत्कालीन समय में नारी का समाज में अहम् स्थान रहा है। वह घर के काम के अलावा पुरुषों का हर हालत में साथ देती थी उन्हें लज्जा नहीं थी लेकिन इसका यह मतलब नहीं है कि उस समय की स्त्रियां चरित्रहीन हों। यहां पर स्नान आदि से लेकर प्रत्येक अंग को सजाने संवारने प्रत्येक प्रकार के दृश्य दिखाये गये हैं। रूप और शृंगार के साथ ही स्त्रियों की भाव भंगिमाएं, अंग-प्रत्यंग विभिन्न मुद्राएं देखते ही बनती हैं एवं कलाकर की कल्पना जो सजीव लगती हैं एक अध्ययन का विषय बन गई हैं। पुरुष के लिए खजुराहो के मन्दिरों में जो स्त्रियों का चित्रण हुआ है वह साधिका व साधक का है। उसमें स्त्री को साधिका के रूप में खुलकर अभिव्यक्त किया है। स्त्री की सहज लज्जा को दर-किनार कर उसके यौवन भार को बेकाबू होते दिखाया गया है। यहां पर स्त्री अपने परमानन्द अवस्था में पुरुष में ही समा जाना चाहती है। पुरुष की इच्छा पर वह झुक गई है। वह इतना झुक गई है कि उसके अन्दर की अस्थियों का भी अस्तित्व ज्ञात नहीं होता। वह अपने अंत:पुर में यौवन की उल्लास तरंगों में खुलकर खेल रही है। वह इतनी आनन्दित है स्त्री की सहज लज्जा का भी ध्यान नहीं रख पाती है। यहां पर स्त्री पुरुष को आपस में ही एक-दूसरे की शरण में ही नहीं वरन् पशुओं के साथ भी सम्भोग का आनन्द लेते हुए दिखाया गया है एवं सामूहिक सम्भोग की क्रिया को भी बहुत ही सुन्दर ढंग से दर्शाया गया है।

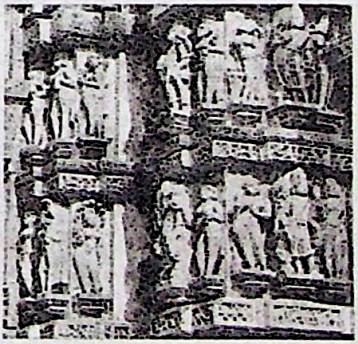

विद्वानों के मन में हमेशा यह जिज्ञासा रही है कि ऐसी भोगपूर्ण मूर्तियां धार्मिक स्थानों पर दर्शाने का क्या औचित्य है?

कुछ विद्वानों का मत है कि ये मूर्तियां एक समुदाय विशेष तांत्रिक (वाम मार्गी शाखा) के क्रिया-कलापों का चित्रण हैं। उनके अनुसार जिस प्रकार योग से मोक्ष की प्राप्ति होती है। उसी प्रकार भोग से मुनष्य जीव को मोक्ष की प्राप्ति होती है। भोग की इस क्रिया को धार्मिक अनुष्ठान या पूजा पाठ की तरह सम्पन्न करते थे। उसी की अभिव्यक्ति इन मन्दिरों में मैथुन मूर्तियों के रूप में दर्शाई गई है।

कुछ विद्वान मानते हैं कि मन्दिरों के निमार्ण काल के समय अर्थ-धर्म-काम और मोक्ष की सिद्धी ही मनुष्य जीवन के परम लक्ष्य होते थे और उपरोक्त चारों का चित्रण किया गया है।

हिन्दू धर्म ग्रन्थों के अनुसार बिजली के प्रकोप से बचाने के लिए ही कामुक मूर्तियां मन्दिरों की दीवारों पर अंकित की गई हैं। उनके अनुसार बिजली की देवी 'यामिनी' जो कि अविवाहित है, मैथुन अथवा सम्भोग की मूर्तियों के कारण लज्जावश वह इनके पास नहीं आती। लेकिन पुरातत्व विभाग इस बात को नहीं मानता है इसलिए उसने तड़ित चालक मन्दिरों में लगवा दिये हैं।

कुछ विद्वान इन मूर्तियों को योगियों की परीक्षा के लिए बनाई गई हैं कि नहीं वह उन्हें देखकर विचलित तो नहीं होते।

कुछ विद्वान मैथुन मूर्तियों को जिसका उदाहरण कन्दरिया महादेव का एक पुरूष तीन स्त्री, चार मूर्तियों वाला दृश्य है, कुंडलनी योग शक्ति के रूप में मानते हैं। कुंडलनी शक्ति मां भगवती अथवा चित्त शक्ति है। यह प्रचण्ड ऊर्जा प्रत्येक नर व नारी के मूलाधार चक्र में, सर्प की भांति कुंडली मारे हुए सुप्तावस्था में रहती है। असंयामी साधक को असावधानी के साथ इस शक्ति को जाग्रत करने की चेष्टा नहीं करनी चाहिए। कुंडलनी नीचे की ओर प्रवृत्त होकर भोग-वासना को बढ़ा सकती है। इस प्रकार एक साधक अपनी शक्ति को ऊपर की ओर प्रवृत्त करने में लगा हुआ है जो कि शीर्षासन की मुद्रा में है।

कुछ विद्वान इसे बुरी तरह नजर से बचाने के लिए इन मैथुन मूर्तियों को मन्दिरों की दीवारों को बड़े ही रोचक एवं सुन्दर ढंग से सजाया गया है। जिस प्रकार एक स्त्री अपने बच्चे को बुरी नजर से बचाने के लिए काजल चेहरे पर लगा देती है। सत्य जो भी हो लेकिन लक्ष्मण मन्दिर एवं विश्वनाथ मन्दिर में तांत्रिकों द्वारा धार्मिक अनुष्ठान के तौर पर इनका प्रयोग दर्शाते हैं। कामसूत्र के सिद्धांत के अनुसार आलिंगनों की भी प्रधानता कुछ मन्दिरों में दिखाई देती है जैसे चित्रगुप्त, जगदम्बा वामन मन्दिर में कुछ इसी प्रकार के दृश्य हैं।

भारत वर्ष के अन्य राज्यों जैसे महाराष्ट्र, उड़ीसा, राजस्थान एवं कर्नाटक आदि में भी मन्दिरों में इस प्रकार के दृश्य देखने को मिलते हैं। उड़ीसा में कोणार्क के सूर्य मन्दिर में कुछ अधिकता से शिल्पकारों ने बहुत मार्मिक ढंग से चित्रण किया हुआ है, लेकिन जितनी प्रचुरता, प्रधानता विस्तारपूर्वक शिल्प विविधता प्रचुर मात्रा में खजुराहो में दिखाई है उतनी शायद अन्यत्र देखने को नहीं मिलती है। प्रभाव की दृष्टि से यह काम उत्तेजक नहीं है बल्कि मैथुन करने के विभिन्न सिद्धांतों के चित्रण होने के कारण ज्ञानवर्धक है विभेद एवं विस्मयकारी दृश्यों से पर्यटकों में काम कला के प्रति सहज ही अन्वेषण करने की प्रेरणा देता है।

खजुराहो के प्रमुख मन्दिर

यहां पर 85 मन्दिरों का निर्माण चन्देल वंशीय राजाओं ने विभिन्न समय में करवाया था लेकिन रख-रखाव का अभाव एवं उपेक्षा के कारण यह मात्र 22 मन्दिर शेष हैं। जिन्हें भौगोलिक दृष्टि से 3 भागों में बांट सकते हैं। पश्चिमी समूह (2) पूर्वी समूह (3) दक्षिण समूह।

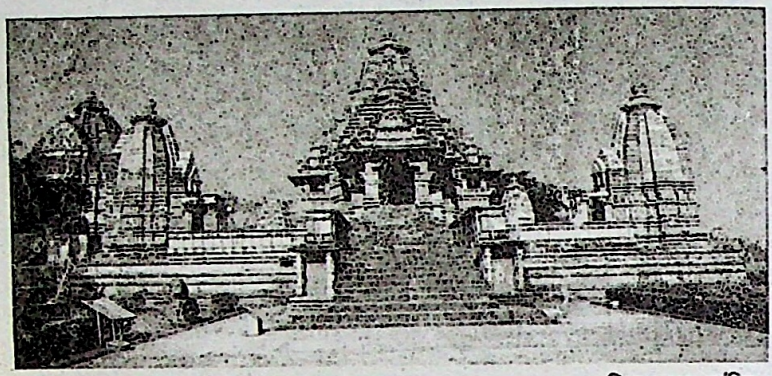

विश्वनाथ मंदिर

पश्चिमी समूह

खजुराहो बस्ती से पश्चिम में होने के कारण इस समूह को पश्चिमी मन्दिर समूह कहते हैं, कुल 12 मन्दिर पश्चिमी समूह में हैं जिनमें प्रमुख विश्वनाथ, लक्ष्मण, कन्दरिया एवं जगदम्बा मन्दिर हैं।

चौंसठ योगिनी मन्दिर

शिव सागर तालाब के पश्चिम की ओर स्थित है चौंसठ योगिनी मन्दिर सबसे पुराना है। चन्देल राज्यवंश के उदय के लगभग 300 वर्ष पूर्व 6वीं शताब्दी में ग्रेनाइट पत्थर का पुर्णत: बना हुआ है। वर्तमान में 35 कोठियां है किंवंदती के अनुसार 65 कोठियां थीं जहां तांत्रिक अनुष्ठान 64 योगनियों के लिए किये जाते थे। एक मात्र ऐसा मन्दिर जिसका मुंह उत्तरमुखी है 5.4 मीटर ऊंचा सह चतुष्कोणीय मन्दिर जिसका माप 31. 4X18.3 मीटर है। सम्भवत: एक काली मूर्ति बांकी में काली की सहचर अन्य 64 योगनियां की मूतियां प्रतिष्ठत की गई हैं। वर्तमान में इस बड़ी कोठरी में महिषासुर, मर्दिनी महेश्वरी एवं चतुर्भुज ब्रह्माणी विराजमान हैं और बाकी कोठरियां खाली हैं। लक्ष्मण मन्दिर में पाये जाने वाली मैथुन मूर्तियां जो जन-जीवन को चित्रित करती हैं। वास्तव में ये चित्र वाममार्गी तांत्रिकों के हैं जो पूर्णिमा की रात्रि में सामूहिक सम्भोग करते थे और यह समारोह 64 योगनियों के ही समय होता था।

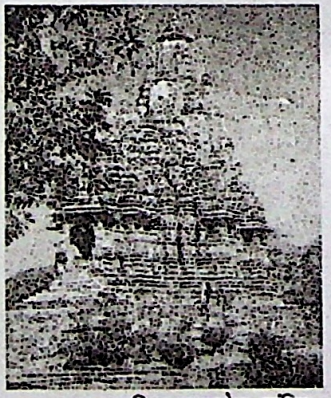

कन्दरिया महादेव मंदिर

लालगुआं मन्दिर

लालगुआं मन्दिर सागर के किनारे एवं चौंसठ-योगिनी के पश्चिम में यह मन्दिर स्थित है। मन्दिर पश्चिम मुखी है। शिखर पिरामिड के आकार का है। मन्दिर का गर्भग्रह खाली है। इसके सामने नन्दी की एक सुन्दर प्रतिमा है। सम्भवत: यह मन्दिर भगवान शिव को समर्पित था। लगभग 900 ई० में बना यह मन्दिर ब्रह्मा मन्दिर के समान है अथवा तुलना की जा सकती है।

मत्तंगेश्वर मन्दिर

हर्षवर्मन ने लगभग 920 ई० में इस मन्दिर का निर्माण कराया था। सम्भवत: चन्देल राजाओं द्वारा निर्मित यह पहला मन्दिर है। किंवदन्ती के अनुसार इस मन्दिर में पूजा-अर्चना निर्माण कार्य से ही होती रही है। यह खजुराहो का सबसे पवित्र मन्दिर है। जिसमें आज भी पूजा-पाठ होता है एवं यात्रियों के लिए खुला रहता है। इसकी निर्माण शैली ब्रह्मा मन्दिर से मिलती-जुलती है। मन्दिर पिरमिड शैली में बना हुआ है। जगति के ऊपर गर्भग्रह तथा एक ही शिखर है। मन्दिर में तीन झरोखे हैं उत्तरी झरोखे के नीचे की ओर सीढ़ियां बनी हुई हैं। पुरातन काल में इसे मृत्युंजय महादेव मन्दिर के नाम से पुकारा जाता था।

भगवान शिव को समर्पित इस मन्दिर के गर्भग्रह में 7.2 मीटर व्यास की जंघा पर 2.5 मीटर ऊंचा, 1.1 मीटर व्यास के शिव लिंग की स्थापना की गई

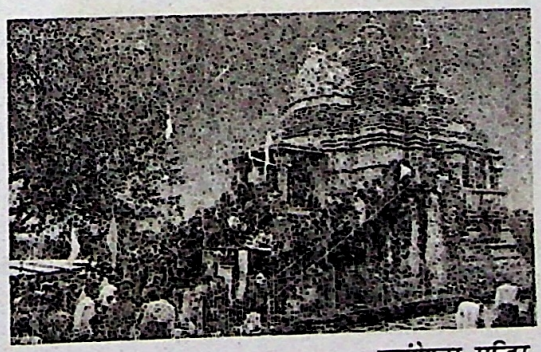

मत्तंगेश्वर मन्दिर

मत्तंगेश्वर मन्दिर में भगवान शिव का विशाल शिवलिंग

है। लोक मतानुसार शिव लिंग के नीचे मरकत मणि रखी है। जिसे साक्षात् शिव ने धर्मराज युधिष्ठर को दी थी बाद में यह हर्षवर्मन को प्राप्त हुई। भगवान शिव का वरदान समझकर उन्होंने शिवलिंग के नीचे वह मरकत मणि स्थापित कर दी।

बराह मन्दिर

बराह मन्दिर बिल्कुल मत्तगेश्वर मन्दिर के सामने स्थित है। जो कि भगवान विष्णु के तीसरे अवतार बराह को समर्पित है। हिरणाक्ष राक्षस को मारकर, पृथ्वी को पाताल से निकालकर, उन्हीं का रूप दिखाया गया है। मत्तगेश्वर मन्दिर के समान पिरामिड शैली का बना हुआ है यह आयताकार बालू पत्थर पर बना हुआ, 14 स्तम्भों पर खड़ा हुआ यह मन्दिर जिसके गर्भग्रह में ही पत्थर पर 2.6 मीटर लम्बी 1.8 मीटर ऊंची बराह की मूर्ति स्थापित है। जिसके पूरे शरीर पर देवी-देवताओं की मूर्तियां अंकित हैं। इन मूर्तियों की संख्या लगभग 764 है। शेष नाग भगवान पैरों के पास भक्ति भाव में दिखाये गये हैं। जबकि पृथ्वी

बराह मन्दिर

देवी की मूर्ति नष्ट हो चुकी है सिर्फ चरण कमल ही बने हुए हैं लगभग उनकी ऊंचाई 2.4 मीटर रही होगी। मन्दिर की छत सुन्दर कमल पुष्प से सुसज्जित है। दो भागों में विभक्त इस कमल में सहस्त्र दल पद्म प्रतीत होते हैं।

लक्ष्मी मन्दिर

लक्ष्मी मन्दिर

बराह मन्दिर की उत्तर दिशा में एवं लक्ष्मण मन्दिर के ठीक सामने स्थित है। यह मन्दिर भगवान विष्णु के वाहन गरुण के लिए बनाया गया तथा लेकिन वर्तमान में इसमें देवी ब्रह्माणी की प्रतिमा स्थापित है जिसे वर्तमान में लक्ष्मी मन्दिर कहते हैं।

लक्ष्मण मन्दिर

यशोवर्मन द्वारा बनवाया यह मन्दिर पंचायत शैली का सबसे सुरक्षित स्थिति में वर्ममान में स्थित है। मन्दिर के मण्डप में दाहिनी तरफ लगे हुए शिलोख में वर्णन मिलता है कि लक्ष्मण मन्दिर राजा यशोवर्मन ने अपने पिता हर्षवर्मन के द्वारा कन्नौज के राजा महिपाल को पराजित कर भगवान विष्णु की प्रतिमा स्थापित करने के लिए 930 ई० बनवाया

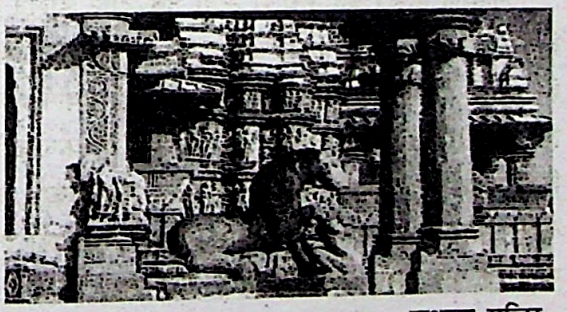

लक्ष्मण मन्दिर

था। यशोवर्मन को लक्ष्मण वर्मन के नाम से भी जाना जाता था। इसलिए इसका नाम लक्ष्मण मन्दिर पड़ा। यशोवर्मन ने मथुरा से 16 हजार शिल्पकारों को बुलाया, उन शिल्पकारों ने इस मन्दिर को 7 वर्ष की अवधि में इस भव्य एवं सुन्दर कलाकृतियों से सुसज्जित कर इस मन्दिर का निर्माण किया। उसी का परिणाम है कि आज 1000 वर्ष से अधिक समय होने पर पूर्ण सुरक्षित है।

मूत्ति लक्ष्मण मन्दिर

भगवान विष्णु को समर्पित यह मन्दिर उनके वैकुण्ठ धाम के समान प्रतीत होता है। विष्णु की प्रतिमा ऐसी जान पड़ती है मानो वह अपने धाम में विश्राम कर रहे हों पंचायत शैली का यह मन्दिर सांधार आकार का है। इसका चबूतरा भी अपनी पुरानी स्थिति में सुरक्षित है जिसके चारों कोनों पर एक-एक उप मन्दिर हैं तथा बीच में प्रमुख मन्दिर स्थित है इसी वजह से इसे पंचायत शैली का मन्दिर कहते हैं।

लक्ष्मण मन्दिर को नीचे से ऊपर तक दृष्टि डालने से ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे बालू पत्थर का न बना होकर बल्कि चन्दन की लकड़ी का बना है। मन्दिर बनाने में छोटे-छोटे टुकड़ों का प्रयोग किया है यह टुकड़े शिल्पकारों द्वारा यहां से करीब 30 कि०मी० दूर केन नदी के तट पर निर्मित किये जाते थे तथा मानचित्र की सहायता से ये टुकड़े बनाते थे तथा उसमें नम्बर डालते जाते थे। जिन्हें श्रमिकों द्वारा खजुराहो लाया जाता था एवं मानचित्र की दूसरी प्रति के सहारे उन्हें नीचे से ऊपर की ओर जोड़कर

मन्दिर का निर्माण किया जाता था। इस प्रकार यह मन्दिर नीचे से ऊपर की ओर छोटे-छोटे टुकड़ों की सहायता से भव्य मन्दिर का निर्माण किया गया।

चबूतरे के दक्षिण पूर्व कोने पर उपमन्दिर निर्मित है जिसके गर्भग्रह में गज लक्ष्मी विराजमान हैं लक्ष्मण मन्दिर पूर्ण विकसित, विलक्षण, सुन्दर आकृतियों से सुसज्जित एवं कला की पूर्ण परिणति इस मन्दिर में देखने को मिलती है। मन्दिर के प्रवेश द्वार पर भगवान सूर्य की एक सुन्दर प्रतिमा देखी जा सकती है जो रथ पर सवार हाथ में कमल के दो फूल लिये हुए हैं। मन्दिर की बाहरी परिक्रमा करने से सबसे पहले बांये से दाहिनी ओर गणपति की प्रतिमा है। इसके बाद जगति से बेदी बन्ध तक वेलबूटी कीर्तिमुख एवं हाथियों की लाइन पूरे परिक्रमा में सुशोभित हैं। हाथियों की विशेष बात यह है कि प्रत्येक हाथी में शिल्पकार ने कहीं-न-कहीं अन्तर रखा है अर्थात् सभी हाथी एक-दूसरे से भिन्न हैं। हाथियों के ऊपर उस युग के मनुष्यों की जीवन झलक दिखायी गई है। छोटी-छोटी प्रतिमाओं की दो लाइनें हैं जिसमें नृत्य, संगीत, शिकार, युद्ध एवं मैथुन आदि के दृश्य अंकित हैं। उस युग के मनुष्य के रहन-सहन, रीति-रिवाज एवं परम्पराओं को दिखलाया गया है। इसके ऊपर मन्दिर की मुख्य दीवार शुरू होती है। प्रमुख दीवार पर ढाई फुट ऊंची प्रतिमाओं की 2 लाइनें बनी हुई हैं। पहली पंक्ति में शिव की प्रतिमा है, जो त्रिशूल, नाग, रुद्राक्ष माला एवं कमण्डल के साथ हैं तथा दूसरी लाइन में विष्णु शंख, चक्र, गदा,

लक्ष्मण मन्दिर की उत्तरी दीवार पर एक युगल बंदर की साथ

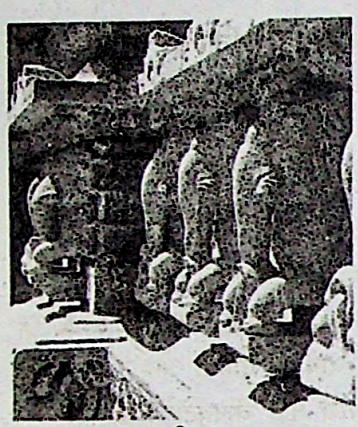

दृश्य लक्ष्मण मन्दिर

पद्म के साथ अभय मुद्रा में देखे जा सकते हैं। विभिन्न भाव-भंगिमाओं में सुर-सुन्दरियों, देव-दासियों, नाग कन्याओं को चतुर्मुखी देव प्रतिमाओं के दोनों तरफ देखा जा सकता है। दक्षिण पूर्व के कोने में भगवान विष्णु के दाहिनी ओर नायिका है जो कि स्नान करने के बाद बाल निचोड़ रही है एवं इसी के कोने के ऊपर की लाइन में प्रेम पत्र लिखती हुई नायिका को दिखाया गया है। प्रेम-पत्र लिखते हुए इसलिए कहा जाएगा क्योंकि जब आप सूक्ष्म दृष्टि से देखेंगे तो पायेंगे कि नायिका प्रसन्न मुद्रा में है। इस मूर्ति के आगे भगवान कार्तिकेय की प्रतिमा है। इसके बाद मन्दिर की मध्य दीवार शुरू होती है। यहां पर दो पंक्तियों के ऊपर अग्निदेव हैं। इनके नीचे देव गंधर्व तथा सबसे नीचे राजा रानी के साथ तांत्रिक, पुरोहित, राजा एवं रानी की आलिंगन मुद्रा बहुत ही प्रभाव छोड़ती है। देव गंधर्व के दाहिनी ओर कालीदास की शकुन्तला का मन मोहक चित्रण चित्रत है। महाकवि कालीदास के ग्रंथ अभिज्ञान शाकुन्तलम में वर्णन किया गया है। कि शकुन्तला जब भी नहाने के बाद बाल निचोड़ती थी तो जो पानी की बूंदें गिरती थीं वह मोती जैसी प्रतीत होती थीं। इसीलिए शकुन्तला के पैरों के पास हंस बैठा हुआ है और जो भी बूंदें नीचे गिरती हैं मोती समझकर उसे चुगता है कालीदास ने शकुन्तला के सौन्दर्य को बड़े हीश्रंगारिक ढंग से वर्णन किया है। कालीदास की शकुन्तला इतनी सुन्दर है कि जब भी वह नहाती थी एवं स्नान करने के बाद सरोबर से बाहर आती थी तब पानी की बूंदें मोती के

समान प्रतीत होती थीं इसी भ्रम में हंस शकुन्तला के पीछे-पीछे चलते थे। खजुराहो के शिल्पी ने इसी रूप को निखार कर छैनी एवं हथौड़ा से परम सौन्दर्य की प्रतिमा को मन्दिर की दीवार पर उकेरा है। देव एवं गंधर्वों के दांयी ओर तांत्रिक योगिनी का चित्रण किया हुआ है। एक हाथ में भिक्षा पात्र एवं दूसरे हाथ में एक दण्ड लिये हुए है। यह नायिका उत्तरीय वस्त्र धारण किये हुए है बाकी नग्न है। इसी रूप को देखकर प्रतीत होता है कि यह तांत्रिक योगिनी है। ये योगनियां भिक्षाटन एवं विचरण करती रहती थीं। इस मध्य दीवार के नीचे की ओर राजा-रानी के आलिंगन के वांयी ओर एक नायिका का बांह के नीचे पीठ पर नख चिन्ह देखते हुए दिखाया गया है। वात्सयान के कामसूत्र के अनुसार स्त्री एवं पुरुष द्वारा एक-दूसरे की कामवासना उत्तेजित करने के लिए नख एवं दन्त का उपयोग करने वाले सिद्धान्त को प्रमाणित करता है। इसके दाहिनी ओर शिव प्रतिमा के पास देवी दासी के हाथ के ऊपर तोता बैठा हुआ है। तोता 64 कलाओं से परिपूर्णता का प्रतीक है। सैनिक एवं सम्मान आदि शांति के समय नगर भ्रमण के लिए निकलते थे और वह इन तोतों को देखकर देवदासी एवं नगर वधू के घेरों को पहचान जाते थे।

दृश्य लक्ष्मण मन्दिर

इसी लाइन के कोने में मैथुन के बाद नायिका कांटा निकालते हुए दिखाई गई है। दृश्य बहुत ही रोचक प्रतीत होता है। इनके उपरान्त भी कई दृश्य इसी दीवार पर अंकित हैं जो दर्शनीय हैं।

दक्षिण पश्चिम कोने पर उप-मन्दिर स्थित है जिसमें शेष सैय्या पर भगवान विष्णु आसन्न हैं।

मुख्य मन्दिर की दीवार पर दक्षिण की ओर

नीचे कोने में मग्न अवस्था में एक युगल को दिखाया गया है। आलिंगनबद्ध होते हुए प्रेमिका अपने प्रेमी के प्रश्नों का उत्तर देते हुए दिखाया गया है। इसके दाहिनी ओर एक सुन्दर नायिका को गाना गाते हुए दर्शाया गया है। जब आप सूक्ष्म दृष्टि से देखेंगे तो पायेंगे कि नायिका के होंठ कुछ चलते हुए दिखाई पड़ते हैं। यहीं पर शिवजी के दर्शन होते हैं। शिवजी के दाहिनी ओर एक अप्सरा को मांग में सिन्दूर भरते हुए दिखाया गया है। एक हाथ में दर्पण एवं दूसरे हाथ से सिन्दूर साफ दृष्टिगोचर होता है। इसके ऊपर की लाइन में अप्सरा को दिखाया गया है जो कीड़ारत है। शिल्पकार ने उपरोक्त अप्सरा की मांसल देह को बड़े ही रोचक ढंग से चित्रित किया है। इसी लाइन में भगवान विष्णु को देखा जा सकता है। उनके बायीं ओर एक अप्सरा को कपड़े पहनते हुए दिखाया गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि उस समय वस्त्र तो अच्छे किस्म के मिलते थे लेकिन सिलाई की कोई व्यवस्था नहीं थी नायिकाएं अपना वक्ष स्थल कुंचकी से नीचे से वस्त्रों को सोने चांदी आदि के कटिबंधों की सहायता से बांधा करती थीं। इसी दीवार पर नीचे की लाइन में दक्षिण पश्चिम कोने पर कापालिक तांत्रिक समूह की नायिका को दिखाया गया है। इसी के पास आलसी युगल को दर्शाया गया है। उसी के पास नायिका को अंगड़ाई लेते हुए दिखाया गया है जिससे आलस्य दूर होता है इसी के कोने में नीचे छोटी लाइनों में आखेट के दृश्य, शिव पूजन, युद्ध एवं मैथुन करते हुए दिखाये गये हैं। इसी मन्दिर के पीछे पश्चिम के आले में

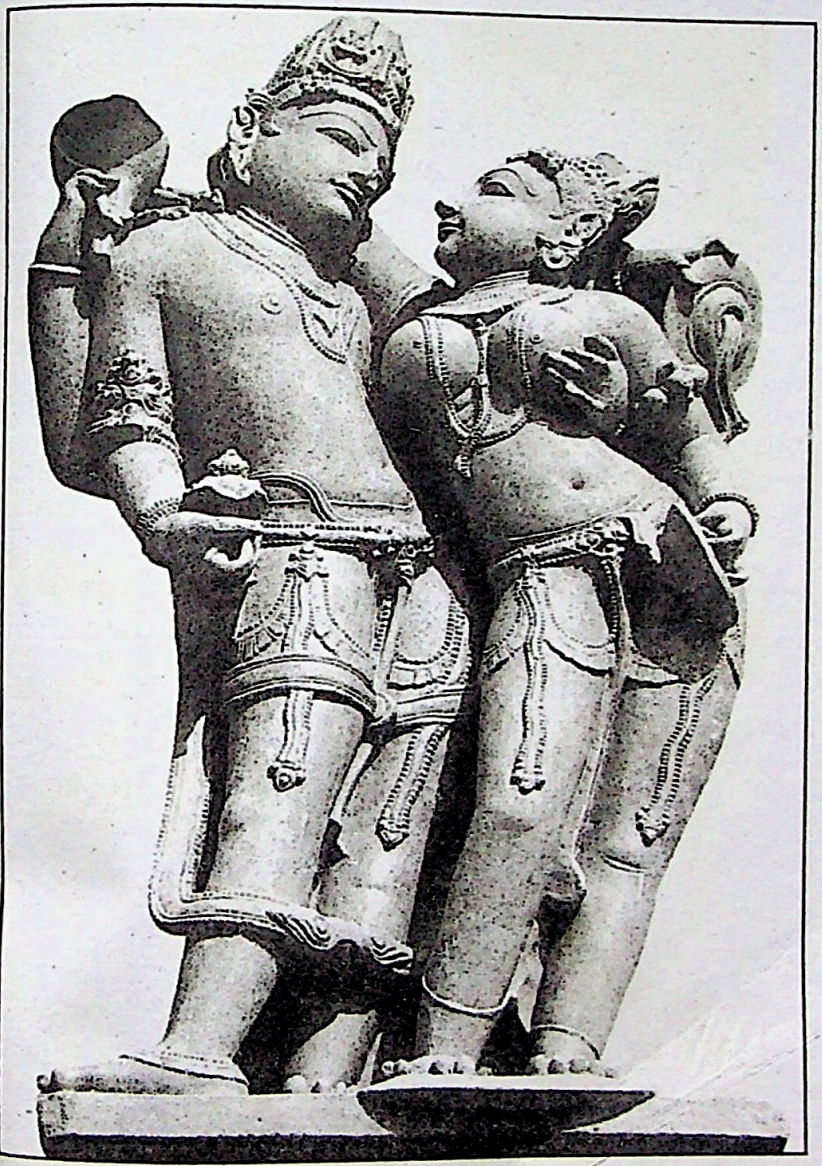

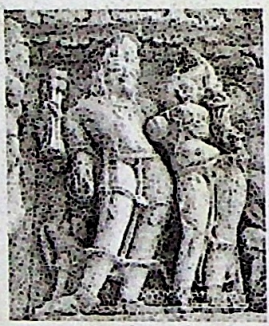

सूर्य भगवान के दर्शन होते हैं।

उत्तर पश्चिम के कोने में एक उप-मन्दिर है जिसके गर्भग्रह में मर्ति नहीं है।

मन्दिर के उत्तर पश्चिम कोने में भी बहुत ही सुन्दर मूतियां दिखाई गई हैं। स्नान के बाद पीठ मलती हुई नायिका को देखा जा सकता है। इसी के पास एक युगल दम्पत्ति को ताड़ी पीते हुए दिखाया गया है। ताड़ी एक विशेष प्रकार की शराब होती है जो खजूर के पेड़ से निकलती है। शिल्पकारों ने इनके इस रूप को बड़े ही रोचक एवं स्पष्ट सजीव चित्रण किया है। इनकी आंखों को देखने से मालूम पड़ता है कि वाकई नशा शरीर में चढ़ रहा है एवं मदमस्त है। सिर्फ जान डालने की जरूरत है। उत्तर पश्चिमी दीवार पर पुताई करते हुए नायिका को दिखाया गया है। उसी के ऊपर वाली लाइन में काम मग्न नायिका को वस्त्र उतारते हुए दिखाया गया है। इसके बाद उत्तरी मध्य दीवार शुरू होती है। जिसमें सबसे ऊपर अग्नि देव की प्रतिमा है। उनके बीच हेमावती व चन्द्रमा को दर्शाया गया है। हेमावती के बांये हाथ में दूज का चांद लिये हुए स्पष्ट देख सकते हैं। यह युगल लोक कथा को स्पष्ट इंगित करता है। कि हेमावती अति सुन्दर एवं यौवन की दहलीज पर थी। एक बार चन्द्रमा हेमावती के असीम सौन्दर्य को देखकर मुग्ध हो गये और उन्हें पृथ्वी पर उतरना पड़ा और वह दूज की एक रात को अवतरित हुए यह युगल इसी लोक कथा को प्रमाणित करते हैं। इसी कारण हेमवती के साथ में दूज का चांद है। इनके नीचे राजा रानी तांत्रिक एवं योगिनी का समूह आदि दृश्य देखने को मिलते हैं। इनके साथ ही

गणेश मूत्ति लक्ष्मण मन्दि

एक-नायक एवं उप-नायिका भी स्थान रखते हैं। मैथुन सम्बन्धी अनुष्ठान की क्रियाओं को आगे बढ़ाते हैं। जैसे कि दक्षिण वाली मध्य दीवार पर कर रहे हैं। एकदम दाहिने कोने पर युगल एक छड़ी से बन्दर को भगाते हुए दिखाया गया है। यहां पर बन्दर मन का प्रतीक है जिसे पुरुष ज्ञान रूपी छड़ी से अपने चंचल मन को बस में करना चाहता है। यहां स्त्री को कामना का प्रतीक माना है जो पुरुष को हमेशा जकड़े रहती है अर्थात् ज्ञान से दोनों मन एवं कामना को बस में किया जा सकता है। स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। उपरोक्त दृश्य देखकर इसी लाइन में युगल मदिरा पान नृत्य करते हुए दिखाया गया है। इसी के नीचे हाथियों की लाइन है उसी के पास कोने में तांत्रिक को नायिका के साथ विशेष मुद्रा में सम्भोग करते हुए दिखाया गया है। इस विशेष मैथुन क्रिया को देखते हुए हाथी का हंसना भी विशेष महत्व रखता है। उपरोक्त मैथुन प्रतिमा में तांत्रिक नायिका की पीठ पर कामबिन्दु को खोज रहा है। जिसे दबाने पर काम पूर्ण उत्तेजित होता है। यह काम बिन्दु प्रत्येक प्राणी के शरीर में होता है जो चन्द्रमा के साथ-साथ शरीर में चढ़ता एवं उतरता है। अमावस्या की काली रात को यह बिन्दु पांव में होता है। पूर्णिमा की रात्रि को यह बिन्दु सिर पर पहुंच जाता है क्योंकि पूर्णिमा की रात्रि को चन्द्रमा पूर्ण यौवन पर होता है। ऐसा विचार है कि तांत्रिक लोग उस बिन्दु को खोंजकर एवं उकसाकर काम का पूर्ण आनन्द लेते हैं तथा एक उत्तेजित काम की क्रिया होती है। इस प्रतिमा में तांत्रिक उसी बिन्दु को खोज रहा है। अपनी शिल्प विशेषता के कारण यह प्रतिमा पूरे विश्व में प्रसिद्ध है।

उत्तर पूर्व कोने पर उस-मन्दिर है जिसमें भगवान विष्णु की चतुर्भुज मूर्ति गर्भग्रह में स्थापित है। मुख्य मन्दिर के अन्तिम आले में महिषासुर मर्दिनी देवी दुर्गा दस भुजी प्रतिमा जो कि अभय मुद्रा में है देखी जा सकती है।

खजुराहो के मन्दिरों में दो प्रकार की प्रतिमाएं देखने को मिलती हैं। प्रथम प्रतिमाएं वो हैं जो बड़े-बड़े बाल रखती हैं दूसरे प्रकार की प्रतिमाएं छोटे-छोटे बाल रखती हैं। छोटे बाल अक्सर तांत्रिक लोग ही रखते थे जिन्हें दूर से ही जाना जाता था और वह हाथ में दण्ड एवं कमण्डल आदि लिये रहते थे। वह गांव-गांव एवं शहर-शहर विचरण करते थे इसी वर्ण विशेष से उन्हें पहचाना जाता था। राजा, रानी, जन-साधारण बड़े-बड़े बालों वाले हैं। तांत्रिक आदि छोटे-छोटे बालों वाले प्रत्येक मन्दिर में दृष्टव्य हैं।

मन्दिर के प्रवेश द्वार पर पत्थर का बना हुआ मकर तोरण है। जिसकी नक्कशी देखते ही बनती है यह शुभागमन का प्रतीक प्रत्येक मन्दिर में देखने को मिलता है यह बहुत ही सुन्दर एवं बरबस ही अपनी ओर ध्यान आकर्षित करता है। मन्दिर के भीतरी भाग को पांच भागों में बांटा जा सकता है। (1) मण्डप (2) महा मण्डप (3) अंतराल (4) गर्भग्रह एवं (5) प्रदक्षिणा पथ।

प्रवेश द्वार के बाद ही मण्डप में पहुंचा जा सकता है। मण्डप में एक शिला लेख विक्रम सम्वत् 1011 सन् 933 ई० देखने को मिलता है। शिलालेख के प्रथम भाग में मन्दिर के अधीष्ठ देव भगवान विष्णु का वर्णन है तथा दूसरे भाग में धंगदेव वर्मन द्वारा अपने पिता श्री यशोवर्मन के गुणों का वर्णन किया गया है।

मन्दिर के दूसरे भाग महामण्डप चार स्तम्भों की सहायता से बना हुआ है जहां नृत्य आदि के लिए बड़ा-सा चबूतरा बना हुआ है। इसके बाद मन्दिर के तीसरे भाग में पहुंचा जाता है जिसे अन्तराल कहते हैं। यहां पर मन्दिर का पुजारी बैठकर मन्दिर में आने वाले भक्त लोगों की पूजा-पाठ आदि में सहायता करते थे। धार्मिक अनुष्ठान विधिपूर्वक कराते थे। इसके बाद मन्दिर का चौथा गर्भग्रह आता है।

प्रवेश द्वार पर अन्य मन्दिरों की भांति इस मन्दिर में भी तीन लोक का

चित्रण देखने योग्य है। इसमें मृत्यु लोक एवं भगवान विष्णु के दश अवतारों का चित्रण मुख्य रूप से देखने योग्य है। प्रवेश द्वार के दायें ओर जय एवं बाई विजय की मूर्तियां हैं। गर्भग्रह में भगवान विष्णु की त्रिमुखी प्रतिमा स्थापित है। अन्य दो मुख्य नरसिंह एवं बराह के हैं। लोकमत के अनुसार इसे कश्मीर के राजा ने लक्ष्मण वर्मन को भेंट किया था। फुल के मतानुसार कन्नौज के राजा को पराजित करके लाये थे। ऐसी मूर्ति अन्यत्र कहीं देखने को नहीं मिलती है। इसके बाद मन्दिर का अन्तिम भाग प्रदक्षिणा पथ हैं आंतरिक मन्दिर एवं बाह्य मन्दिर को जो अलग करता है। उस बीच के भाग को प्रदक्षिणा पथ कहते हैं जिसे गर्भग्रह की परिक्रमा के लिये बनाया गया है। मन्दिर की आन्तरिक शिल्पकारी बड़ी ही मनमोहक है एवं जिस प्रकार से बाह्य भाग की सज्जा एवं सुन्दरता है उसी आंतरिक भाग को देखते बनता है। यहां प्रतिमाओं की दो लाइनें हैं नीचे की लाइन में अष्ट दिक्पाल प्रत्येक आठ कोनों में दर्शाया गया है। इन्द्र, अग्नि, यम, नैत्रृत्य, वरुण, वायु, कुबेर तथा ईशान के दर्शन होते हैं। ऊपर की लाइन में भगवान कृष्ण की लीला दर्शायी गयी है जिसमें कालिया मर्दन, चाणूर बध एवं कुवलय पीठ का बहुत की सजीव चित्रण किया गया है। मन्दिर के उत्तरी भाग में भू-वरहा रूप में नरसिंह, ह्यग्रीव के दर्शन होते हैं।

लक्ष्मण मन्दिर ही एक ऐसा मन्दिर है जो अपने मूल में स्थित है। एक हजार वर्ष होते हुए भी ज्यों का त्यों विद्यमान है। मन्दिर से उतरकर भी पूरे मन्दिर की बाह्या परिक्रमा की जा सकती है। दायें से बायें परिक्रमा करने पर लगभग एक फिट भी प्रतिमायें प्लेटफार्म के चारों तरफ देखने को मिलती हैं जिसमें उस समय के जीवन एवं रहन-सहन आदि देखने को मिलता है। इसमें लगभग साढ़े चार फीट लम्बे पेनल बने हुए हैं। उस काल के जीवन से सम्बन्धित कृत्यों की झाकियां प्रस्तुत की गई हैं। शिकार के दृश्य, व्यापारियों

को व्यापार करते हुए दिखाया गया है दक्षिणी-पूर्व कोने के दृश्य में पूर्णिमा की रात्रि में सामूहिक सम्भोग के दृश्य का अवलोकन किया जा सकता है जिसे तीन खण्डों में दर्शाया गया है। दूसरे खण्ड में पंचमकार का दृश्य विशेष उल्लेखनीय है। पंचमकार के सेवन के बाद सामूहिक सम्भोग विभिन्न मुद्राओं में दृष्टिगोचर होता है। अध्यापक द्वारा नृत्य एवं संगीत की शिक्षा की जा रही है। घोड़ी के साथ सम्भोग दिखाया गया है जो कि युद्ध के दौरान सैनिकों की मनःस्थिति की झलक स्पष्ट देखने को मिलती है। युद्ध के दौरान सैनिक स्त्रियों से बहुत दूर युद्ध के मैदान में रहते हुए जहां स्त्री नहीं जा सकती है। युद्ध के दौरान सैनिक अपनी वासना तृप्ति के लिए छोटे कद की घोड़ियों का उपयोग करते थे। आगे धर्मगुरु अपने शिष्यों को धर्म की शिक्षा देते हुए दिखाया गया है। विवाह आदि के दृश्य सैनिक सामन्तों आदि को दिखाया गया है। उत्तर पूर्व के खण्ड मन्दिर निर्माण कर्त्ता उन शिल्कारों को देखा जा सकता है। जो अपनी छैनी हथौड़ी से सुन्दर विशाल एवं अनूठे मन्दिरों को गढ़ रहे हैं।

कन्दारिया महादेव मन्दिर

महाराजा विद्याधर ने जब मुहम्मद गजनी को दूसरी बार परास्त किया एवं मुहम्मद गजनी को भगाने में सफल हुए तब उन्होंने इसे भगवान शिव की कृपा माना। इसके बाद लगभग 1065 ई० विद्याधर द्वारा कन्दरिया महादेव मन्दिर का निर्माण किया। भगवान शिव का यह विशाल मन्दिर 117 फुट ऊंचा, 117 फुट लम्बा एवं 66 फुट चौड़ा है। मध्य युगीन

कन्दारिया महादेव मन्दिर

मकर तोरन कन्दारिया महादेव मंदिर

यह मन्दिर अपनी शिल्प कला एवं स्थापत्य एवं कला का उत्कृष्टतम् उदाहरण है जिसे कला पारखी निहारते ही रहते हैं। दूर से इस मन्दिर को अवलोकन करने पर ऐसा लगता है जैसे कोई विशाल पर्वत खड़ा हो। इसका प्रवेश द्वार ऐसा प्रतीत होता है जैसे किसी कन्दरा अथवा गुफा का द्वार हो। इसलिए इस विशाल मन्दिर का नाम कन्दरिया पड़ा।

सप्तरथ शैली का यह मन्दिर खजुराहो के मन्दिरों में सबसे अधिक विकसित है। इस मन्दिर के गर्भग्रह में संगमरमर की शिवलिंग स्थापित है। लोकमत के अनुसार जोकि अमरनाथ के शिव लिंग का प्रतीक है। सान्धार शैली का यह मन्दिर पांच भागों में विभक्त है। एक ही पत्थर से बना हुआ मकर तारण प्रवेश द्वार के ऊपर शोभायमान है जिसे शुभागमन का प्रतीक मानते हैं। कन्दारिया महादेव मन्दिर अन्य मन्दिरों से विशाल एवं वृहत् है। कमरतोरण के ऊपर कई प्रकार की मूर्तियां खुदी हुई हैं। इसमें नाना प्रकार के वाद्ययन्त्र बजाते हुए संगीतकार, देवताओं की मूर्तियां, प्रेमी युगल, युद्ध, नृत्य एवं राग-विराग आदि की मूर्तियाँ देखने को मिलती हैं। इसके बाद महामण्डप आता है और महामण्डप की छत के ऊपर जो कारीगरी की गई है उसे कभी भुलाया नहीं जा सकता है। यहाँ पर जो नायिकाओं की मूर्तियाँ

गढ़ी हैं उनकी तुलना स्वर्ग की अप्सराओं से की जाती है। पैरों के नूपुर, पैजांनिय, तोड़ा कमर के कटिबंध, मणि झालर एवं पट्टिका, वक्ष स्थल पर सतलड़ी, मणि माला, हार, हाथों के भुजबन्ध, चूढ़ा, बंगरी, माथे, की बिंदया, शशि फूल, सिर के पुष्प, मुकट आदि आभूषणों का चित्रण बड़े ही रोचक ढंग से शिल्पकार ने किया है। गर्भगृह के प्रवेश द्वार पर साधुओं को तपस्या करते दिखाया गया है। वेदी के द्वार पर एक घड़ियाल पर गंगा, कछुए पर खड़ी यमुना नदी को देखा जा सकता है।

गर्भगृह की बाह्य दीवार पर दो लाइनों में मूर्तियाँ हैं. नीचे की पंक्ति में अष्ट दिक्पाल की मूर्तियाँ हैं।

मन्दिर के चारों ओर तीन पंक्तियों में मूर्तियाँ सुसज्जित की गई हैं। इन मूर्तियों में देवी-देवताओं, प्रेमी युगल आदि उस समय के जीवन की झलक प्रस्तुत करते हैं। मन्दिर के मध्य भाग में मैथुन के दृश्य हैं जिसमें शीर्षासन वाला दृश्य प्रमुख है। एक पुरुष एवं तीन स्त्रियों के साथ दिखाया गया है। उत्तर की ओर मध्य भाग में मैथुन वाली मुद्राओं को नीचे से ऊपर की ओर क्रम से प्रस्तुत किया गया है। उपरोक्त कृतियाँ कामसूत्र के द्वितीय अध्याय में वर्णित सिद्धान्त को प्रतिपादित करती हैं कि मैथुन क्रिया के पूर्व आलिंगन एवं चुम्बन द्वारा एक-दूसरे को उत्तेजित करना चाहिए। उत्तर पूर्वी कोने पर एक स्त्री की जंघा पर विच्छू दर्शाया गया है एवं स्त्री को वस्त्र उतारते हुए नग्न अवस्था में दृश्य है। विच्छू काम की इच्छा का प्रतीक है। कामोत्तेजक स्त्रियों की जंघा पर बिच्छू दिखाया जाता है।

महादेव मन्दिर

कन्दारिया महादेव के उत्तर में शिव मन्दिर है जिसे महादेव मन्दिर कहते हैं। इस मन्दिर का मूल भाग खण्डित है वेदी भी नष्ट हो चुकी है। प्रवेश द्वार पर शिव की प्रतिमा ही महादेव मन्दिर का प्रतीक है। स्तम्भ के साथ चबूतरा ही वर्तमान में स्थित है जिसमें सिंह की मूर्ति रखी है। प्रथम चन्देल राजा (चन्द्रवर्मन) को शेर के साथ युद्ध करते हुए दिखाया गया है। इसे ही चन्देल राजाओं ने अपना राजकीय चिह्न घोषित किया था।

देवी जगदम्बा मन्दिर

देवी जगदम्बा मन्दिर का निर्माण गण्डदेव वर्मन ने किया था। यह मन्दिर निरन्धार शैली का बना हुआ है, अर्थात् मन्दिर की आन्तरिक संरचना प्रवेश द्वार, महामण्डप, अन्तराल एवं गर्भगृह है। मन्दिर की छत पर खुदाई का कार्य देखते ही बनता है। मूल रूप मे यह मन्दिर भगवान विष्णु का था। गर्भगृह के प्रवेश द्वार के ऊपर गरुण पर आरूढ़ विष्णु की मूर्ति आज भी देख सकते हैं। महाज छतरपुर ने सन् 1880 के लगभग इसका जीर्णोद्वार कराया था एवं साथ ही मनियागढ़ से पार्वती की मूर्ति लाकर यहाँ स्थापित की थी। तभी से यह जगदम्बा अथवा पार्वती मन्दिर नाम हुआ।

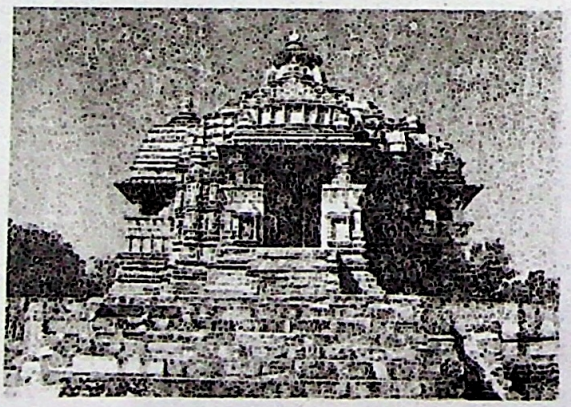

देवी जगदम्बा मंदिर

मन्दिर का बाह्य भाग सुन्दर

एवं दर्शनीय है दीवालों पर निर्मित आलिंगन की मूर्तियाँ विशेष उल्लेखनीय हैं। कुबेर, यम एवं शीशा देखते हुए अपनी ओर आकर्षित करती हैं। दीवारों पर प्रतिमाओं की दो लाइनें हैं तथा उसके ऊपर छोटी प्रतिमाओं की एक लाइन है।

मूर्ति देवी जगदम्बा मंदिर

चित्र गुप्त मन्दिर

11 वीं सदी के उत्तारार्ध में निर्मित यह मन्दिर निरन्धर शैली का है अर्थात् आंतरिक भाग को हम चार भागों में विभक्त कर सकते हैं। प्रवेश द्वार, महामण्डप, अन्तराल एवं गर्भग्रह है। गर्भग्रह में भगवान सूर्य की मूर्ति स्थापित है जो कि सप्त अश्व के रथ पर आरूढ़ हैं। सूर्य के दाहिनी ओर चित्रगुप्त भगवान की एक खण्डित मूर्ति है जो कि लेखनी लिये हुए हैं। उन्हीं के नाम पर इस मन्दिर का नाम चित्रगुप्त पड़ा। भगवान चित्रगुप्त सभी का लेखा जोखा रखते हैं ऐसा धर्मग्रन्थों में वर्णन है। मन्दिर के आगे के हिस्सा का सन् 1920 में छतरपुर रियासत ने जीर्णोद्धार कराया था।

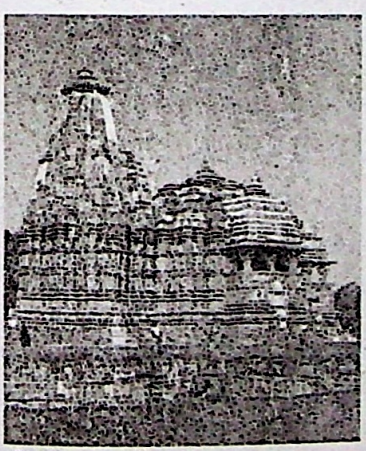

चित्र गुप्त मन्दिर

बड़ी प्रतिमाओं की तीन लाइन एवं छोटी प्रतिमाओं की एक लाइन दृष्टिगोचर

चित्र गुप्त मन्दिर

होती है। इसमें ऊपर की लाइन में सभी मूर्तियाँ एक फुट ऊँचाई की हैं। शाल भंगकाओं के अलावा विभिन्न आलिंगनों में मुगल मूर्तियाँ इस मन्दिर की विशेषता हैं। पत्थर छोने, हाथियों से भिड़ंत, उत्सवों, शिकार एवं नृत्य आदि की मूर्तियाँ उल्लेखनीय हैं।

वेदी की दक्षिण में एक आले में भगवान विष्णु की 11 सिरों वाली मूर्ति दर्शनीय है। बीच वाला मुख विष्णु का एवं इसके दोनों तरफ दशावतार दिखाये गये हैं।

चौपड़ा तालाब

चित्रगुप्त मन्दिर से लगभग 200 मी0 दूर चौपड़ा तालाब स्थित है जिसमें चारों तरफ सीढ़ियाँ बनी हुई हैं। इसके मध्य में खम्भों पर छतरी बनी हुई है।

पार्वती मन्दिर

पार्वती मन्दिर ईटों व चूने का बना हुआ है। पार्वती मन्दिर मूल रूप से किसी-न-किसी देवता का प्राचीन मन्दिर रहा होगा जो बाद में सन् 1880 में पुनः निर्माण हुआ एवं देवी पार्वती को समर्पित हुआ। इसमें केवल गर्भगृह ही है। गर्भगृह में गौ माता पर गौरी मूर्ति प्रतिष्ठित है।

विश्वनाथ मन्दिर

विश्वनाथ मन्दिर 1002 ई0 में महाराजा धंगदेव द्वारा बनवाया गया तथा यह मन्दिर सुन्दर एवं अपनी शिल्प कला में खजुराहों के दूसरे मन्दिरों की

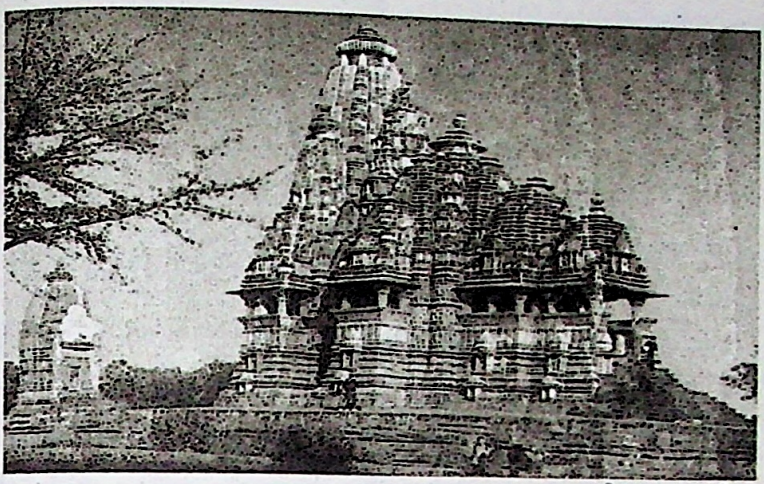

विश्वनाथ मन्दिर

तरह बेजोड़ है। पश्चिमी मन्दिर समूह में यह मन्दिर उत्तर भाग में स्थित है। यह मन्दिर भगवान शिव को समर्पित है। यह मन्दिर पंचायतन शैली का है। इसके चारों कोने पर चार उप-मन्दिर बने होंगे लेकिन इस समय मात्र दो उप-मन्दिर शेष हैं। एवं उत्तर पूर्व के कोने पर एवं दूसरा दक्षिण पश्चिम कोने पर स्थित है शेष दो काल के ग्रास में समा गये।

जिस समय इस मन्दिर का निर्माण हुआ उस समय शिल्पकला अपनी चरम सीमा पर थी। इस मन्दिर की शिल्प एवं स्थाप्तय कला को देखने से प्रमाणित होता है कि कितनी उन्नत एवं समृद्ध थी। मन्दिर की लम्बाई 89 फीट एवं पौने 46 फीट चौड़ाई है। इसके उत्तर की तरफ के जीने की ओर दो हाथी हैं। मन्दिर की बाह्य दीवार पर ज्ञान मुद्रा में धर्म उपदेश करते हुए श्री गणेश जी हैं। उसके बाद विभिन्न आलों में चामुण्डा, इन्द्राणी, वराही, वैष्णवी, कौमारी, महेश्वरी एवं ब्राह्मणी सप्त मात्रकायें विशेष दर्शनीय है। मन्दिर की मुख्य दीवार में छोटी-मोटी प्रतिमाएँ हैं जो उस समय के जीवन, रीति-रिवाज को दर्शाती हैं एवं समाज कितना समृद्ध एवं सम्पन्न था झलक

देखने को मिलती है। इससे ऐसा प्रतीत होता है कि उस समय चन्देल वंश समृद्धि एवं उन्नति के चरण शिखर पर था। इन मूर्तियों में संगीत, नृत्य, काम-क्रीड़ा एवं उत्सव आदि का चित्रण हुआ है। वेदी बंध के ऊपर एक छोटे पैनल में शिल्पकारों द्वारा निर्माण किया हुआ पत्थर यहाँ से 30 किमी0 दूर से श्रमिकों द्वारा लाया गया है। उसका दृश्य देखने को मिलता है। उस समय की उन्नत शिल्प एवं सम्पन्नता को दर्शाता है।

इस मन्दिर की मूर्तियों के केश विन्नयास एवं विभिन्न प्रकार से अलंकृत आभूषणों से सुसज्जित मूर्तियाँ अपने आप में अनूठी है। उनके चेहरे के भाव सजीव हैं। मन्दिर की मुख्य दीवार में मूर्तियों की तीन लाइनें हैं। नीचे की पंक्ति में अष्टदिक्पाल हैं एवं मध्य में देव प्रतिमाएँ हैं। देव प्रतिमाओं के दोनों ओर नायिकाएँ विभिन्न मुद्राओं में दर्शायी गई हैं। नाग कन्याएँ, देव-दासियों जो चंवर डुला रही हैं विशेष उल्लेखनीय है। यह मन्दिर सांधार शैली का है। इसकी आंतरिक संरचना में प्रवेश द्वार महामण्डप, अन्तराल, गर्भग्रह एवं प्रदक्षिणा पथ है। प्रवेश द्वार पर मकर तोरण नहीं है शयद काल के गर्त में खो गया है गर्भग्रह में शिवलिंग स्थापित है प्रदक्षिणा पथ में पाँच झरोखे देखने को मिलते हैं। इन झरोखों में देवदासी एवं पुजारी बैठा करते थे। धार्मिक चर्चाएँ एवं कथाएँ उस समय हुआ करती थीं। मन्दिर के अन्दर उत्तर की ओर अर्धनारीश्वर पश्चिम की ओर नटराज भगवान की मूर्ति है तथा दक्षिण की ओर अंधकासुर वध शिव द्वारा दिखाया गया है। मन्दिर के बाह्य दीवार के मध्य मैथुन क्रिया के दृश्य दिखाये गये हैं। जिससे प्रतीत होता है कि सामूहिक मैथुन दृश्य तांत्रिक अनुष्ठान कर रहे हैं।

नन्दी मन्दिर

विश्वनाथ मन्दिर के एक ही चबूतरे पर पूर्व की ओर नन्दी मन्दिर है जो कि भगवान शिव का वाहन है। नन्दी की 6 फीट ऊँची भव्य प्रतिमा

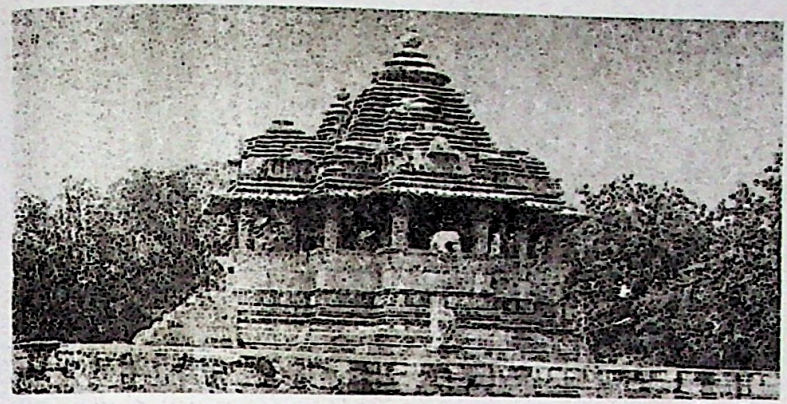

नन्दी मन्दिर

अनुकरणीय एवं दर्शनीय है। यह मन्दिर छोटा एवं खम्भों पर बना हुआ है।

पूर्वी मन्दिर समूह

खजुराहो बस अड्डे से 2 किमी0 दूर खजुराहो बस्ती के समीप स्थित मन्दिर पूर्वी मन्दिर समूह के नाम से जाने जाते हैं। इनमें ब्रह्मा, वामन, जवारी, घंटाई, पार्श्वनार्थ, आदिनाथ एवं शातिनाथ प्रमुख हैं। इसके साथ ही खखरा मठ हैं जो काल के प्रभाव से नष्ट हो चुका है। यह बौद्ध मठ था जिसकी मूर्ति पुरातत्व संग्रहालय में देखी जा सकती हैं।

हनुमान मन्दिर

पश्चिमी समूह से पूर्वी समूह की तरफ जाने पर लगभग 1 किमी0 दूरी पर हनुमान मन्दिर आता है। भक्तजनों ने इस मन्दिर में जो मूर्ति है उसके ऊपर सिन्दूर चढ़ा रखा है मूर्ति की लम्बाई लगभग 3 मी0 है। हर्ष शासन काल का एक शिला लेख प्रतिमा की पीठ पर देखा जा सकता है। लगभग 922 ई0 का यह शिलालेख सबसे पुराना शिलालेख है यहाँ से आगे रास्ता दो भागों में बंट जाता है एक रास्ता जैन मन्दिर की ओर तथा दूसरा रास्ता ब्रह्मा, जवारी एवं वामन मन्दिर की ओर जाता है।

वामन मन्दिर

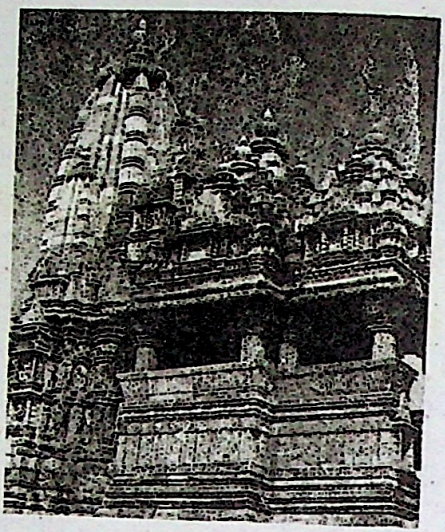

वामन मन्दिर

ब्रह्मा मन्दिर से लगभग 200 मीटर की दूरी पर यह मन्दिर उत्तर पूर्व में स्थित है। भगवान विष्णु के वामन अवतार को समर्पित है। यह मन्दिर निरन्धार शैली का है। मन्दिर का प्रवेश द्वार टूटा हुआ है लेकिन महामण्डप एवं गर्भग्रह अच्छी तरह स्थित में है। इस मन्दिर में कोई मैथुन प्रतिमा नहीं है। इस मन्दिर की विशेषता है कि नायिकाएँ अपने अनूठे सौन्दर्य की छठा बिखेरती है। शिल्पकार ने अपनी पूर्ण कला इसी मन्दिर में बिखेरा है। भगवान शिव के विवाह का दृश्य भी मार्मिक है। इसमें शिव एवं पार्वती को अग्नि के फेरे लेते हुए दिखाया गया है। 1050-75 ई0 में इसका निर्माण हुआ है।

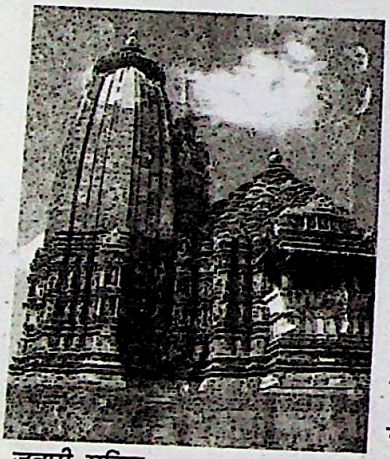

जवारी मन्दिर

जवारी मन्दिर

भगवान विष्णु के लिये समर्पित यह मन्दिर लगभग 1075-1100 ई0 का बना हुआ है। वामन मन्दिर से 200 मीटर की दूरी पर उत्तर पूर्व की ओर यह मन्दिर स्थित है। प्रवेश द्वार पर मकर तोरण बहुत ही सुन्दर बना हुआ

है। मन्दिर छोटा होते हुए भी इसमें प्रतिमाएँ बहुत हैं। मन्दिर की बाह्य दीवार पर तीन लाइन की मूर्तियाँ हैं। जिसमें कुछ मैथुन के दृश्य भी पाये जाते हैं। इस मन्दिर की प्रतिमाएँ इतनी सुन्दर हैं कि मन को इतना आकर्षित करती हैं जिसका वर्णन करना मुश्किल है।

ब्रम्हा मन्दिर

900 ई0 का बना यह मन्दिर ननोरा ताल के पूर्वी तट पर स्थित है। यह बालू एवं लावा पत्थर से निर्मित है। यह पिरामिड शैली का मन्दिर है।

इसका शिखर मत्तगेश्वर, वाराह एवं लालगुआ मन्दिर से मिलता-जुलता है। मन्दिर में ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश के दर्शन होते हैं। प्रवेश द्वार पर गंगा एवं यमुना की मूर्तियाँ भी देखने को मिलती हैं।

खखरा मन्दिर

खजुराहो बस्ती करीब 500 मीटर की दूरी पर उत्तर में यह भगवान बुद्ध का मन्दिर था जो कि उस समय भव्य एवं सुन्दर रहा होगा। आज केवल चबूतरा एवं कुछ खम्भे शेष हैं मन्दिर के गर्भ गृह में प्राप्त भगवान बुद्ध की प्रतिमा संग्रहालय के मुख्य कक्ष की शोभा बढ़ा रहे हैं।

जैन मन्दिर समूह

घंटाई मन्दिर

खजुराहो गाँव के दक्षिण में स्थित घंटाई मन्दिर अपनी कला के लिये अद्वितीय उदाहरण है। इसके स्तम्भों पर लटकती हुई घंटियाँ

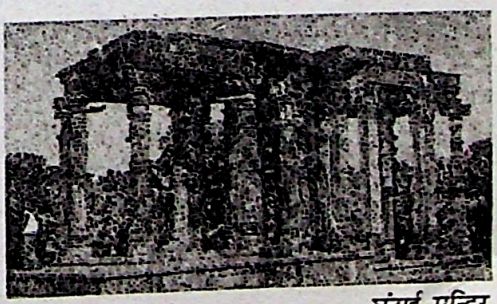

घंटाई मन्दिर

शिल्पकार की अपनी अनूठी कृति है। घंटिओं के कारण ही इसे घंटाई मन्दिर के नाम से जानते हैं अपने जमाने में यह मन्दिर भव्य, सुन्दर एवं उत्कृष्ट नमूना था लेकिन आजकल की गति के कारण खण्डहर में तब्दील है। घंटाई मन्दिर का प्रवेश द्वार एवं महामण्डप की छत आज भी पुराने समय की भव्यता की याद दिलाता है। गर्भग्रह के प्रवेश द्वार पर गरुड़ के ऊपर विराजमान शासन देवी चक्रेश्वरी तथा तीर्थकार के गर्भधारण के समय उनकी माता को दिखायी देने वाले 16 स्वप्न भी प्रदर्शित हैं।

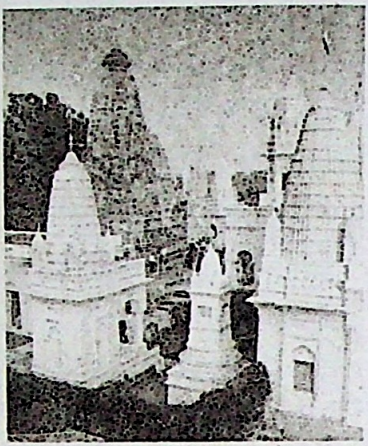

जैन मन्दिर समूह

पार्श्वनाथ मन्दिर

पाहिल नामक श्रेष्ठी द्वारा 10वीं शताब्दी में पार्श्वनाथ मन्दिर का निर्माण हुआ था। महामण्डप के प्रवेश द्वार पर लगा हुआ शिलालेख पर वर्णन है कि यह मन्दिर पाहिल नामक श्रेष्ठी ने लगभग 950 ई0 में बनवाया था।

पंचरथ शैली में निर्मित यह मन्दिर जैन समूह में सबसे श्रेष्ठ मन्दिर है। पार्श्वनाथ मन्दिर में युगल चित्रों का अभाव है। विद्वानों के अनुसार यह मन्दिर यहाँ के समस्त मन्दिरों में उत्कृष्ट एवं सुन्दर है। मन्दिर की आंतरिक संरचना में मण्डप, महामण्डप, गर्भगृह, अन्तराल एवं प्रदक्षिणा पथ दर्शनीय हैं। गर्भगह के प्रवेश द्वार पर तीन लोक का चित्रण है। नव-ग्रहों के साथ ही जैन तीर्थकारों को देखा जा सकता है। मन्दिर के आलों में जैन तीर्थकार की प्रतिमाएँ देखने को मिलती हैं। इन्हीं में प्रथम तीर्थकार ऋषभ देव जी की शासन देवी चत्रैश्वरी अष्ट भुजाओं वाली मूर्तिदर्शनीय है जिसमें चत्रेश्वरी

देवी-गरुड़ पर विराजमान हैं। भगवान पार्श्वनाथ 23 वें तीर्थकार की श्याम वर्ण प्रतिमा गर्भग्रह में सन् 1917 में प्रतिष्ठित की गई तभी से यह मन्दिर पार्श्वनाथ मन्दिर कहलाने लगा।

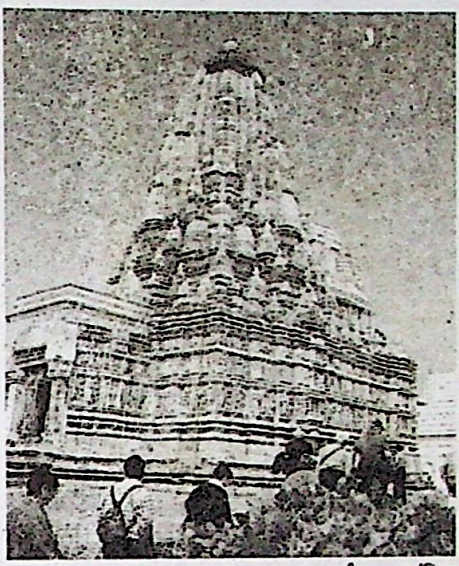

पार्श्वनाथ मंदिर

बाहरी दीवार पर कुबेर, द्वारपाल, गजारूढ़ एवं अश्वारूढ़ जैन देवी-देवताओं की मूर्तियाँ बहुत सुन्दर ढंग से चित्रित की गई हैं। पद्म पुराण, चक्रेश्वरी एवं धरेणाद्र जैसे जैन ग्रन्थों के कथानकों का चित्रण भी देखने योग्य है। अष्ट दिक्पाल दर्शनीय है। मन्दिर के अन्दर एवं बाहर जो भी मूर्तियाँ गढ़ी गई हैं वह हृदय को स्पर्श करती हैं ऐसा महसूस होता है जैसे सजीव चित्रण मनमोहक है। देवी-देवता हाथों में ढाल, तलवार, बरछी,

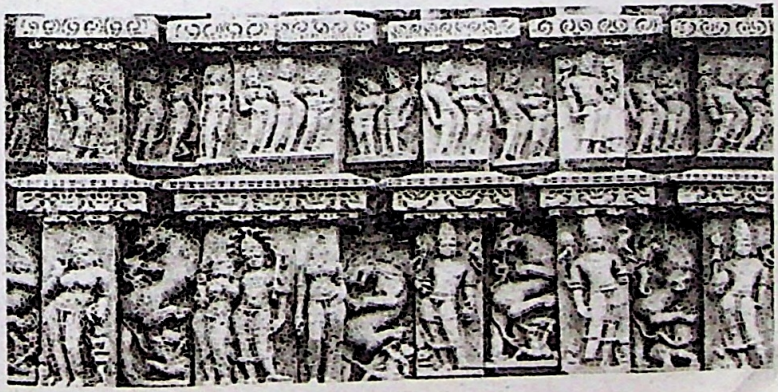

तीरकमान आदि हथियार लिये हुए हैं। देवी-देवता अपने वाहनों पर आरूढ़ हैं जैसे घोड़े, मगरमच्छ, हिरण, शेर, बैल आदि। इस मन्दिर में जितनी मूर्तियाँ है शिल्पकार ने अपनी उच्चतम शिल्प शैली को मूर्तियों को गढ़ने में सर्वथा सफलता पायी है। चाहे वह नायिका की कमनीय देह हो या लचकदार कमर हो अथवा सुन्दरी सिरो भाग की लज्जा व्यक्त कर रही हो। काजल लगाते हुए मृगनयनी महिला हो। कला की इन अनमोल कृतियों में शीशा देखते हुए नायिका, केश संवारती हुई नायिका, पायल पहनते हुए, आलता लगाते हुए, प्रेम पत्रिका लिखते हुए आदि प्रमुख हैं। स्नेह जनित वात्सल्य माता अपने बच्चे को पुचकारते हुए बच्चे को स्तन पान करा रही है। नृत्यांगना अपने नुपूर को बाँधते हुए दिखाया गया है। कृष्ण की वंशीवादन एवं नायिका ढोलक बजाते हुए भी दर्शनीय है। इतनी भाव प्रवण मूर्तियों को दर्शक अपलक निहारता रहता है। आँखें ऐसीकृति को देखकर झपकने का नाम नहीं लेती प्रकाश अन्दर जाने के लिए दूसरे मन्दिरों की अपेक्षा झरोखों की बजाय छोटे-छोटे छिद्र बने हुए हैं।

आदिनाथ मन्दिर

पार्श्वनाथ के उत्तर में आदिनाथ मन्दिर स्थित है। यह आकार में छोटा है। निरन्धार शैली का यह मन्दिर पार्श्वनाथ मन्दिर के लगभग 100 वर्ष बाद में निर्मित हुआ। मन्दिर के गर्भगृह में जैन तीर्थकार प्रथम ऋषभदेव की प्रतिभा विराजमान है। इन्हें आदिनाथजी के नाम से भी जाना जाता है। मन्दिर

की बाहरी दीवाल पर तीन पंक्तियों की लाइन में मूर्तियाँ दर्शित हैं। सबसे ऊपर की लाइन में गंधर्व, किन्नर एवं विद्याधर हैं। दोनों लाइनों में देवता, यक्ष एवं अप्सरायें आदि बीच की लाइन में देव कुलिकाएँ हैं। जिसमें 16 शासन देवियों का स्पष्ट उल्लेख किया हुआ है। बालक के लिए हुए ममतामयी जननी विशेष रूप से उल्लेखनीय है। नृत्य करते हुए नायिका विशेष वर्णनीय है। उसके नीचे ढोलक बजाते हुए दर्शनीय हैं।

आदिनाथ मन्दिर

जैन संग्रहालय

जैन मन्दिर परकोटा के बाहर नव-निर्मित संग्रहालय है। आधुनिक स्थापत्य कला का सुन्दर उदाहरण देखने योग्य है। यहाँ की प्रबन्ध समिति ने यहाँ पड़ी हुई प्रचुर मात्रा में जैन मूर्तियाँ एवं जैन सामग्री आदि को संकलित करके इस संग्रहालय में संग्रहीत की हुई हैं। वर्तमान में लगभग 200 मूर्तियाँ इस संग्रहालय की शोभ बढ़ा रही हैं।

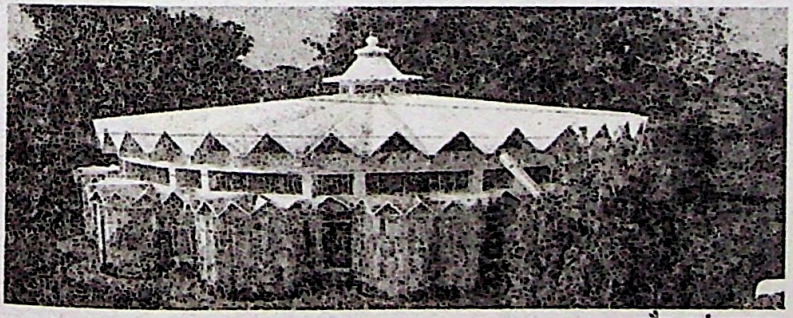

जैन संग्रहालय

शांतिनाथ मन्दिर

शांतिनाथ मन्दिर ही एक ऐसा मन्दिर है जहाँ पर आज भी पूजा-अर्चना सुचारू रूप से चल रही है। यह मन्दिर विशाल, गम्भीर, सौम्य एवं शांतिदायनी भगवान शांतिनाथ की मूर्ति के लिए प्रसिद्ध है। गर्भग्रह में स्थित भगवान शातिनाथ की 4.5 मीटर ऊँची प्रतिमा 11वीं सदी में निर्मित की गई थी। मन्दिर के मण्डप में बायीं ओर की दीवाल में इसके तीर्थकार पार्श्वनाथ जी के शासन देव-देवी धरणेन्द्र पद्मावती की मूर्ति देखी जा सकती है।

दक्षिणी मन्दिर समूह

खजुराहो गाँव के दक्षिण में तथा खूड़र नदी के पास स्थित मन्दिर समूह दूल्हादेव एवं चतुर्भुज मन्दिर प्रमुख है।

दूल्हादेव मन्दिर

घंटाई मन्दिर से लगभग 500 मीटर की दूरी पर दक्षिण दिशा में नदी के किनारे दूल्हादेव मन्दिर स्थित है। यह मन्दिर खजुराहों की स्थापत्य एवं

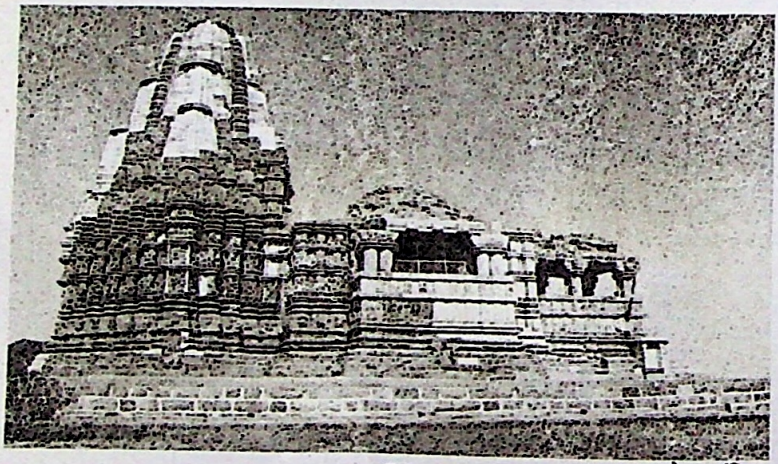

दूल्हादेव मंदिर

मूर्तिकला का बेजोड़ उदाहरण है। इसे सर्वोत्तम मन्दिर की श्रेणी में गिना जाता है। यह मन्दिर भगवान शिव को समर्पित है। दूल्हादेव मन्दिर का निर्माण सन् 1100-1150 में हुआ। निरंधार शैली का यह मन्दिर कुंवर मठ अथवा नीलकठेश्वर मन्दिर के नाम से जाना जाता था कनिघम द्वारा लिखा गया है। गर्भग्रह के द्वार पर तीन लोक के चित्रण में सप्त मातृकाएँ एवं नृत्य लोक का चित्रण उल्लेखनीय है।

गर्भग्रह में सहस्त्रामुखी शिव को प्रतिष्ठित किया गया है। 1000 छोटे-छोटे शिवलिंग, शिवलिंग पर अंकित हैं। जिनकी पूजा करने से एक हजार एक शिवलिंग का फल प्राप्त होता है। लोकमतानुसार, एक बारात यहाँ से गुजर रही थी यकायक दूल्हे राजा घोड़े से गिर पड़े एवं तुरन्त ही स्वर्ग सिधार गये। उसी समय से इस मन्दिर का नाम 'दूल्हादेव' लोग कहने लगे। इस मन्दिर की मूर्तियाँ छोटी एवं गहराई में कम गहरी हैं। यहां की मूर्तियों की भाव भंगिमाओं की छटा देखते ही बनती है। शारीरिक बनावट एवं मुख की मुद्रा अपने आप में बेजोड़ है। यहां प्रतिमाओं की तीन लाइन है। मैथुन

मूर्तियां विशेष उल्लेखनीय है जो दूसरे मन्दिरों से भिन्न है। युगलों की विभिन्न मुद्राएं दर्शनीय हैं। सबसे ऊपर की लाइन में गंधर्व एवं किन्नर उड़ते हुए दिखाए गये हैं जिसका सजीव चित्रण दिखाता है। मन्दिर के दक्षिणी आले में अंधकासुर वध एवं ऊपरी आले में पद्मासन अवस्था का चित्रण देखने योग्य है।

चतुर्भुज मन्दिर

खजुराहो गांव के दक्षिण में चतुर्भुज मन्दिर स्थित है। पश्चिमी मन्दिर समूह से इस मन्दिर की दूरी लगभग 4 किमी0 है। इसका निर्माण 11वीं शताब्दी में हुआ। यह निरन्धार शैली का मन्दिर है। गर्भग्रह एवं प्रवेश द्वार बाला यह मन्दिर पश्चिमी मुखी है। गर्भग्रह में भगवान शिव की चतुर्मुखी 2.7 मीटर ऊची प्रतिमा प्रतिष्ठित है। कुछ लोग इसे विष्णु प्रतिमा भी कहते हैं।

बाहरी दीवाल में दक्षिण की ओर अर्धनारीश्वर की मूर्ति विशेष दर्शनीय है एवं उत्तर की ओर नरसिंह की मूर्ति है। ऊपर गंधर्वों एवं विद्याधरों की मूर्ति देखने योग्य है।

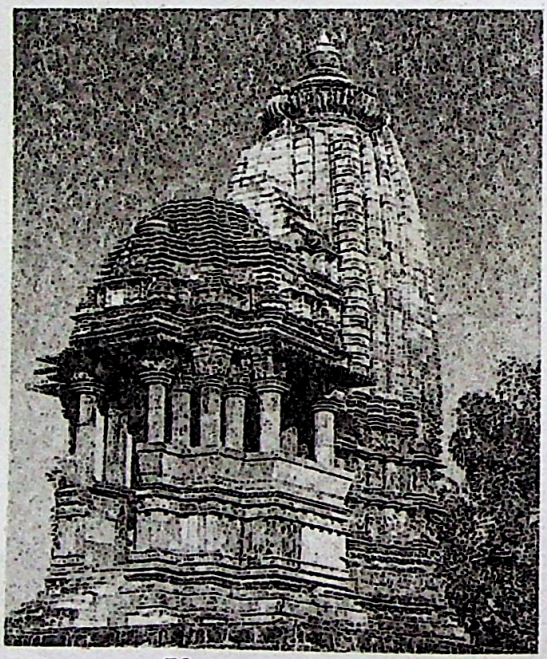

चतुर्भुज मन्दिर

पुरातत्व संग्रहालय

पश्चिमी मन्दिर समूह के बाहर एवं शिव सागर तालाब के पूर्व में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण का पुरातत्व संग्रहालय सन् 1967 में बना था। खजुराहो तथा इसके आसपास की पुरा सम्पदा को परिचय संहित इस संग्रहालय में संग्रहीत किया गया है।

संग्रहालय को पांच भागों में विभक्त किया गया है जिसमें जैन कक्ष, विष्णु कक्ष, विविध कक्ष एवं शिव कक्ष प्रमुख हैं। मुख्य कक्ष में बड़ी-बड़ी मूर्तियाँ हैं जिसमें नृत्य में गनेश, भूमि स्पर्श ध्यान अवस्था में भगवान बुद्ध विशेष उल्लेखनीय हैं। यहीं पर दाहिने कोने में हरिहर की मूर्ति है। इस प्रतिमा के आधे भाग में विष्णु तथा दूसरे आधे भाग में शिव के दर्शन होते हैं। ऐसा रूप इसलिये भगवान ने धारण किया था जिससे शैव एवं वैष्णव सम्प्रदाय की वैमन्स्यता खत्म हो जाये एवं एक ही रूप समझा जाये। विष्णु कक्ष में भगवान विष्णु के सन्दर्भ में विभिन्न रूपों को दर्शाया गया है जबकि शिव कक्ष में भगवान शिव से सम्बन्धित प्रतिमाओं को देखा जा सकता है। जैन कक्ष में विविध प्रकार की मूर्तियों का समावेश किया हुआ है। इसमें बांये कोने पर एक नायिका द्वारा दो गेंदों से क्रीड़ा करते हुए दिखाया गया है वह अपने दोनों हाथों से दोनों गेंदें उछाल रही हैं। इसी क्रम को दोहराते हुए गेंद नीचे गिर जाती है लेकिन नायिका अपने वक्ष को गेंदे के भ्रम में उछालने लगती है। शिल्पकार द्वारा निर्मित ऐसी प्रतिमाएँ जो कहानी का वर्णन करती हैं उन्हें दर्शक देखकर आश्चर्य में पड़ जाते हैं। इसी कक्ष में शिल्पकारों का अपने कार्य में रत, आखेट के दृश्य विशेष उल्लेखनीय है। शिव कक्ष में पार्वती की मूर्ति एवं सदाशिव की मूर्ति उल्लेखनीय है।

खजुराहो में प्रतीकात्मक दृश्य

शार्दूल

हिन्दू धर्म ग्रन्थों में शार्दूल को मन का प्रतीक माना है जो 10 इंद्रियों का राजा माना जाता है। चंचल मन को वश में करना बहुत ही कठिन है। जीवन में परेशानियां मन द्वारा ही निर्मित होती हैं। शार्दूल को प्रमुख रूप से तोता का मुंह, शेर का मुंह एवं हाथी के सिरों वाला देखा जा सकता है। उपरोक्त तीनों रूपों को सतोगुण, रजोगुण एवं तमोगुण में विभक्त किया जा सकता है।

शार्दूल के साथ दो पुरुषों को दिखलाया गया है। एक पुरुष शार्दूल के मुंह के पास निहार रहा है वहीं दूसरा पुरुष अस्त्र लिये हुए उसके पाव के पास दिखाया गया है। पुरुष को यहां पर ज्ञान अथवा विवेक बुद्धि का प्रतीक माना है। पुरुष अपनी विवेक बुद्धि से मन को वश में करने की कोशिश करता है और यह चक्र मनुष्य के जीवन भर चलता रहता है। यह अन्तर्द्वन्द्वतब तक चलता है तब तक मनुष्य या तो मृत्यु को प्राप्त होता है अथवा ज्ञान से काम और इच्छा को अपने वश में कर लेता है वही मनुष्य मोक्ष को प्राप्त होता है उसे दुबारा जन्म नहीं लेना पड़ता है।

कीर्तिमुख

मन्दिरों के वेदी वंध के ऊपर कीर्ति मुख सिंह के मुख समान प्रतीत होते हैं। जहाँ इसे शुभ चिह्न माना गया है वही मनुष्य के जीवन में धर्म को समझाने के लिए बनाये गये हैं।

मनुष्य जीव की कामनाएं बहुत होती हैं। यह कभी पूरी नहीं होती। उसकी जितनी पूर्ति की जावे उतनी ही बढ़ती रहती है। धर्म गुरुओं ने कामनाओं एवं इच्छाओं पर अंकुश लगाना श्रेष्ठ माना है। यम एवं नियम के द्वारा मनुष्य जीव को बांधना शुरू किया और इसी को धर्म माना है। कीर्तिमुख कामना का प्रतीक माना गया। धर्म ग्रन्थों में इसका वर्णन बहुत ही मार्मिक ढंग से किया है। इसकी कभी भूख नहीं मिटती है। आखिर में यह अपने आपको खाने लगता है शेष मुख बचता है। इसी प्रकार मनुष्य की कामनाएं कभी मिटती नहीं हैं। आखिर में वह भी खत्म हो जाता है। इसलिए धर्म ग्रन्थों में नैतिक नियमों का पालन करने के लिए कहा गया है कि वह धर्म है।

खजुराहो के नजदीक पर्यटक स्थल

रनेह जल प्रताप

रनेह जल प्रताप केन नदी के तट पर प्राकृतिक सौन्दर्य से भरपूर स्थान है। यह खजुराहो के उत्तर पूर्व में 19 किमी0 की दूरी पर स्थित है। लगभग 320 मीटर की ऊंचाई से जल गिरता है यहां 4 किमी0 की दूरी पर केन घड़ियाल अभ्यारण्य है।

पाण्डव जल प्रपात

खजुराहो से 34 किमी0 की दूरी पर पन्ना के रास्ते पर एक जल प्रपात है। पाण्डव जल प्रपात में 30 मीटर की ऊंचाई से कुण्ड में गिरता पानी मनोहरी दृश्य प्रस्तुत करता है कुंण्ड में स्नान आदि की भी व्यवस्था है। इसमें स्नान करने से सुखद अनुभव प्राप्त होता है। निर्मल जल का गिरना ऐसा प्रतीत होता है जैसे कि दुग्ध धारा बह रही है। लोक मतानुसार महाभारत के पाण्डवों ने अपने अज्ञातवास का कुछ समय यहां व्यतीत किया था। इसलिये इस स्थान को पाण्डव जल प्रपात के नाम से जाना जाता है यहां साधुओं के रहने का स्थान भी है।

धुवेला संग्रहालय

खजुराहो से 64 किमी0 दूर स्थित है यह मध्य युगीन स्थापत्य कला वास्तु कला, चित्रकला, वस्त्राभूषण आदि की स्वर्णिम काल की व्याख्या करते हैं।

पन्ना राष्ट्रीय उद्यान

खजुराहो से 32 किमी0 दूर स्थित है यह केन नदी के साथ बहुत ही विस्तृत क्षेत्र में फैला हुआ है। प्राचीन समय में यह पन्ना एवं छतरपुर रियासत का शिकारगाह था। इसमें चीता, भेड़िया, भालू, नीलगाय, घड़ियाल, सांभर, हिरण, जंगली सूअर, रीछ आदि वन्य जीव पाये जाते हैं। यह प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण है।

ओरछा

झांसी खजुराहो मार्ग पर झांसी से 19 किमी0 दूर वेतवा के तट पर स्थित है। ओरछा अपने प्राचीन मन्दिरों एवं महलों के लिए प्रसिद्ध है। यहां के प्रमुख स्थलों में जहांगीर महल, राजमहल, राम प्रवीण महल, राम राजा

मन्दिर, चतुर्भुज मन्दिर, लक्ष्मी नारायण, दीवान हरदौल जू का स्थान आदि प्रमुख है।

चित्रकूट

यह एक हिन्दू तीर्थ स्थल है चित्रकूट में भगवान राम ने अंधिकांश समय अपने वनवास का बिताया था। यह महर्षि तुलसी दास की साधना स्थली वहीं सती अनुसुइया जी के यहां ब्रह्मा, विष्णु और महेश की जन्मस्थली भी है। खजुराहो से 195 किमी0 दूरी पर स्थित है।

पन्ना हीरे की खान

खजुराहो से 64 किमी0 दूर हीरे की खदानें है जो भारत सरकार के अधीन है। दर्शनार्थियों के लिये केवल 1 बजे तक खुली रहती है। इसके बाद बन्द हो जाती है।

बान्धवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान

खजुराहो से लगभग 215 किमी0 दूरी पर बान्धवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान स्थित है 105 वर्ग किमी0 में फैला हुआ है। यह क्षेत्र वन्य प्राणियों का स्वर्ग कहा जाता है। यहां हिरण, नीलगाय, बाघ, तेंदुआ, चीता, भालू आदि प्राकृतिक परिवेश में देखने को मिलते हैं। बान्धवगढ़ का किला आज से 2000 वर्ष से अधिक प्राचीन है। यह अपने प्राचीन इतिहास का साक्षी है। किले के पास कई गुफाएं हैं। किले के पास कई गुफाएं हैं। किले से उद्यान का प्राकृतिक सौन्दर्य देखते ही बनता है।

पूज्यनीय स्थल

मत्तगेश्वर मन्दिर, हनुमान मन्दिर, शांतिनाथ जैन मन्दिर आदि हैं। डाक तार विभाग बस स्टैंड के पास स्थित हैं।

शापिंग

खजुराहो में शापिंग के लिए प्लाजा मार्केट, पश्चिमी मन्दिर समूह के सामने, गोल मार्केट, मृगनयनी एम्पोरियम, बाजपेयी मार्केट आदि प्रमुख हैं। पश्चिमी मन्दिर समूह से जैन मन्दिर तक रोड के दोनों तरफ पर्यटकों को ठहरने के लिए होटल, जलपान के लिए रेस्टोरेन्ट एवं जरूरत का सामान

खरीदने के लिए दुकानें उपलब्ध हैं। भारत सरकार पर्यटन कार्यालय एवं पश्चिमी मन्दिर समूह के सामने है। आदि वासी एवं लोककला स्टेट म्यूजियम (सोमवान बन्द) पश्चिमी मन्दिर समूह से उत्तर में 5 मिनिट का रास्ता. बुक शॉप (गाल मार्किट के सामने)

भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त गाईड उपलब्ध हैं

नृत्य उत्सव एक सप्ताह के लिए मार्च महीने में होता है।

अस्पताल

शासकीय अस्पताल बस स्टैंड के पास है।

महत्वपूर्ण जानकारियाँ

खजुराहो के बारे में सामान्य जानकारी

क्षेत्रफल		21 वर्ग किलोमीटर
ऊँचाई		280 मीटर
तापमान		उच्चतम (49 C) औसतन (21 C)
वर्षा		114 सेंटीमीटर
उपयुक्त मौसत	-	अक्टूबर से अप्रैल
भाषाएँ	-	हिन्दी, अंग्रेजी, बुंदेलखंडी

खजुराहो कैसे पहुँचे ?

दिल्ली और वाराणसी से खजुराहो वायुमार्ग एवं रेलमार्ग द्वारा जुड़ा हुआ है। इसके निकटतम रेलवे स्टेशन झाँसी, सतना, महोंबा और हरपालपुर है।

दिल्ली व चैन्नई की ओर से आने वाले पर्यटक झाँसी तथा कलकत्ता मुम्बई व वाराणसी की ओर से आने वाले पर्यटक सतना रेलवे स्टेशन पर आगमन कर सकते है। यहाँ बस तथा टैक्सी द्वारा खजुराहो आसानी से पहुँचा जा सकता है। झाँसी रेलवे स्टेशन के बाहर खजुराहो को जाने वाली बसें उपलब्ध रहती है। जहाँ से पर्यटक अपनी सुविधानुसार बस चुनकर खजुराहो के लिए प्रस्थान कर सकते हैं। झाँसी बस स्टैण्ड से भी खजुराहो जाने के लिये बसे मिलती है। पर्यटक चाहें तो झाँसी से छतरपुर आकर खजुराहो के लिये बस और जीप की सुविधा का लाभ उठा सकते है। खजुराहो बस मार्ग द्वार विभिन्न शहरों से जुड़ा हुआ है। इंदौर, आगरा, भोपाल, सागर, सतना, छत्तरपुर, हरपालपुर, महोबा से खजुराहो के लिए सीधी बस सेवा उपलब्ध है।

खजुराहो में रेलवे सुविधा

खजुराहो में आने वाले पर्यटकों की सुविधा को ध्यान में रखते हुये रेलवे विभाग ने खजुराहो बस स्टैण्ड परिसर में ही कम्प्यूरीकृत टिकट एवं आरक्षण केन्द्र खोला है। यह आरक्षण केन्द्र सुबह 8 से 12 और दोपहर 1 से 4 बजे तक खुला रहता है तथा रविवार के दिन सुबह 8 से 2 बजे तक खुला रहता है। खजुराहो से महोबा, वाराणसी तथा दिल्ली तक रेलवे की सुविधा उपलब्ध है। पर्यटक रेलवे पूछताछ के लिए दूरभाष क्रमांक 280805 पर जानकारी प्राप्त कर सकते हैं तथा रेलवे आरक्षण दूरभाष क्रमांक 274416 पर कर वा सकते है।

बस सुविधा

खजुराहो से झाँसी	खजुराहो से ग्वालियर
खजुराहो से आगरा	खजुराहो से सतना
खजुराहो से महोबा	खजुराहो से वाराणसी
खजुराहो से इंदौर	खजुराहो से भोपाल

नोट : *पर्यटक यात्रा करने से पूर्व दूरभाष क्रमांक 244090 (खजुराहो बस स्टैण्ड) पर बस के समय के बारे में पुष्टि आवश्य कर लें और पूर्व आरक्षण करवा लें।*

ए.टी.एम. सुविधा

स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, सैन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, केनरा बैंक

कार्यक्रम

1. लाईट एंड साउंड कार्यक्रम मध्य प्रदेश सरकार द्वारा प्रमाणित पश्चिमी मंदिरों के समूह में आयोजित होता है।

2. मध्य प्रदेश सरकार द्वारा निर्मित फैसिलिटैशन सैन्टर से पर्यटक महत्वपूर्ण जानकारियाँ प्राप्त कर सकते हैं और यहाँ लोकनृत्य का आनन्द भी प्राप्त कर सकते हैं।

3. कान्दारिया आर्ट एण्ड कल्चर में भी लोकनृत्य आयोजित किया जाता है।

खजुराहो के प्रसिद्ध भोजनालय

अग्रसेन रेस्टोरेंट	पैराडाइज रेस्टोरेंट
मैदितरानियों रेस्टोरेंट	मिडले कैफे
ब्ल्यु स्काई रेस्टोरेंट	मद्रास कॉफी हाउस
सिद्धार्थ होटल	टैम्पल व्यू कॉफी हाउस
अग्रवाल भोजनालय	श्याम स्वीट सेंटर
राजा कैफे स्वीट रेस्टोरेंट	लिटराजा रेस्टोरेंट
आदिशक्ति भोजनालय	बम्बूरी ट्रीट रेस्टोरेंट

खजुराहो के प्रसिद्ध होटल

होटल ★	दूरभाष	होटल ★	दूरभाष
ताज चन्देला ★	272355	उषा बुंदेला ★	272386
ललित टैम्पल व्यू ★	272111	क्लार्क खजुराहो ★	274257
जस रेडिसन	272376	रमाडा होटल	272301
झंकार	274063	सिद्धार्थ	274627
पायल	274064	टूरिस्ट विलेज	274128
टूरिस्ट बंगला	274221	यूरो स्टार व्यू	------
कासा द विलियम	274244	लोटस इंडिया	------
सनराइज व्यू	274077	लेक साइड	272120
हारमोनी	274135	इंडिया	274049
जैम पैलेस	274100	सूर्या	274145
मार्बल पैलेस	274353	मार्को पोलो	274202

गुप्ता पैलेस	274209	जैन	272352
झेन	274228	ग्रीनवुड	------
निरवाना	------	गौतमा	272675
जैन धर्मशाला	274148	शांति	272304
योगी लौज	274158		

★ पाँच सितारा होटल (फाइव स्टार होटल)

खजुराहो से विभिन्न शहरों की दूरी तालिका

दूरी (कि.मी.)	शहर	दूरी (कि.मी.)	शहर
598	दिल्ली	1,250	मुम्बई
1,068	कलकत्ता	1,931	चैन्नई
385	आगरा	276	ग्वालियर
415	वाराणसी	175	झाँसी
285	इलाहाबाद	195	चित्रकूट
167	रीवा	46	छतरपुर
55	महोबा	88	हरपालपुर
120	सतना	43	पन्ना
151	टीकमगढ़	207	ललितपुर
198	दमोह	200	सागर
300	जबलपुर	170	कटनी
666	नागपुर	378	भोपाल
345	साँची	582	इंदौर
236	कानपुर		

बस समय सारिणी

खजुराहो से दिल्ली	17.30
खजुराहो से आगरा	9 बजे सुबह
खजुराहो से ग्वालियर	11.15, 16
खजुराहो से झांसी	5.30, 13, 15.30, 16.30, 17.30, 19.15
खजुराहो से हरपालपुर	17.30
खजुराहो से सागर	13.00
खजुराहो से पन्ना	7.30, 9.10, 11.30, 15, 18.30
खजुराहो से मोहबा	7.30, 10.30, 12, 16.30, 18.30

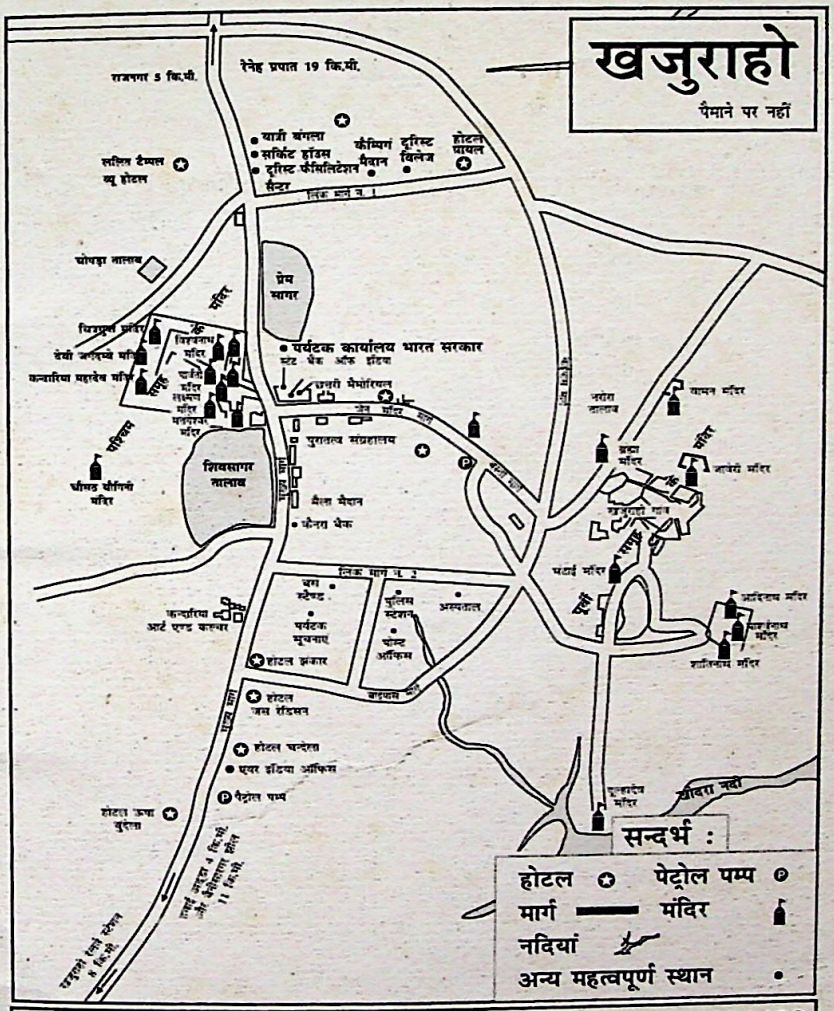

वितरक :-

M. 9893954400

खजुराहो आर्ट मार्ट & बुक वर्ल्ड

भारत लोज के नीचे, खजुराहो (म०प्र०)

प्रकाशक : टूरिस्ट पब्लिकेशन

1939/7, शंकर टैरेस, फव्वारा चाँदनी चौक, दिल्ली 6